SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:54, Issue: 07
DECEMBER-2023, Price Rs.20/-
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

दिसंबर-2023

रु.20/-

तिरुमल में
वैकुंठ एकादशी के संदर्भ में
स्वर्ण रथयात्रा
दि. 23-12-2023

श्री कपिलेश्वरस्वामी का मंदिर - तिरुपति

तिरुपति से 3 कि.मी. की दूरी पर पर्वत के ढ़लान पर श्री कपिलेश्वरस्वामी का मंदिर स्थित है। कपिल महर्षि की तपस्या पर संतुष्ट होकर भगवान शिव ने श्री कपिलेश्वर नाम से स्वयंभू शिवलिंग के रूप में उद्भूत हुए। यहाँ का तीर्थ कपिलतीर्थ कहा जाता है। पवित्र कार्तिक मास में अधिक संख्या में भक्तजन यहाँ पुण्य स्नान करते हैं। प्लवोत्सव और आर्द्रा दर्शन महोत्सव ये दोनों उत्सव क्रम धनुर्मास के समय में संपन्न होंगे।

दिनांक	वार	प्लवोत्सव के उत्सव क्रम
22-12-2023	शुक्र	श्री विघ्नेश्वरस्वामी जी को, श्री चंद्रशेखरस्वामी जी को
23-12-2023	शनि	श्री सुब्रह्मण्यस्वामी जी को
24-12-2023	रवि	श्री सोमस्कंधस्वामी जी को
25-12-2023	सोम	श्री कामाक्षि देवीजी को
26-12-2023	मंगल	श्री चंडीश्वरस्वामी जी को, श्री चंद्रशेखरस्वामी जी को
27-12-2023	बुध	श्री कपिलेश्वरस्वामी जी का आर्द्रा दर्शन उत्सव

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतपः।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-९)

सञ्जय बोले - हे राजन्! निद्रा को जीतनेवाले अर्जुन अन्तर्यामी श्रीकृष्ण महाराज के प्रति इस प्रकार कहकर फिर श्री गोविन्द भगवान से 'युद्ध नहीं करूँगा' यह स्पष्ट कहकर चुप हो गये।

विन्नपालु विनवले विंत विंतलु
पन्नगपु दोमतेर पैकेत्तवेलय्या ।।विन्नपालु।।

तेल्लवारू जामेक्के - देवतलु मुनुलु
अल्लनल्ल नंतनिंत - नदिगोवारे
चल्लनि तम्मि रेकुलु सारसपु गन्नुलु
मेल्लमेल्लनेविच्चि मेलुकोन वेलय्या ।।विन्नपालु।।

गरुड किन्नर यक्ष कामिनुलु गमुलै
विरहपु गीतमुल विंतलपाला
परिपरि विधमुल पाडेरु सन्निधिलो
सिरिमोगमु देरचि चित्तगिंच वेलय्या ।।विन्नपालु।।

पोंकपुशेषादुलु तुंबुरु नारदादुलु
पंकजभवादुलु नी पादालु चेरि
अंकेलनुन्नारु लेचि अलमेल्मंगनु
वेंकटेशुडा रेप्पलु विच्चि चूचि लेवय्या ।।विन्नपालु।।

समस्त लोकाधिपति श्री वेंकटेश से मसहरी को तनिक हटाकर भक्तों की विनतियों को सुनने की प्रार्थना की गयी है।

हे स्वामी! सुप्रभात वेला हो गयी है। देवी-देवताएँ तुम्हारी सन्निधि में पहुँच चुके हैं। अपने कमल जैसे नेत्रों को खोलकर जाग उठिए। गरुड, किन्नर, यक्ष, कामिनियाँ तुम्हारे विरह में मंदिर के सामने खडे होकर गीतालाप कर रहे हैं। लक्ष्मी के पार्श्व से तनिक हटकर उनकी व्यथा सुनिए। आदिशेष, तुंबुरु, नारद, ब्रह्मादि भक्तश्रेष्ठ, तुम्हारे चरणों के पास ही खडे होकर, तुम्हारी करुणा भरी दृष्टि की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अलमेल्मंगा के साथ शयन-सुख में थके हे स्वामी! पलकें खोलिए।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल, तिरुचानूर में हजारों की संख्या में भक्तों को प्रतिदिन अन्नप्रसाद वितरण होने की बात भक्तों को विदित ही है। अब ति.ति.दे अन्नप्रसाद ट्रस्ट ने भक्तों, दाताओं को दान देने का और खूना अक्सर देना चाहता है। इसलिए एक दिन दान की योजना प्रवेश कर रहा है।

एक रोजाना खर्च -

1. एक दिन - 38 लाख
2. अल्पाहार - 8 लाख
3. मध्याह्न भोजन - 15 लाख
4. रात्रि भोजन - 15 लाख

इस नकद को दाताओं से संग्रहित करने के लिए सिद्ध हो रहा है। तिरुमल तिरुपति देवस्थानों का अन्नदान ट्रस्ट। दाताओं - व्यक्तियों/कंपनियों/संस्थाओं/ट्रस्टों/संयुक्त ढंग की व्यवस्था हो सकती है। ये रोजवारी नकद कुल 25 लाख या अल्पाहार - 5 लाख, दोपहर का भोजन - 10 लाख या रात्रि भोजन - 10 लाख प्रदान कर सकते हैं। दाताओं को ति.ति.देवस्थान के द्वारा आयोजित सुविधाएँ एक रीत होंगी। अपने मर्जी के अनुसार सूचित एक दिन पर अन्नदान कर सकती है। और दाता का नाम भी अन्नदान केंद्र में डिसूप्ले होता है।

अन्य विवरण के लिए संपर्क करें -
उप कार्यकारी अधिकारी (डोनार सेल) FAC.,
ति.ति.दे., तिरुमल।
(cdmc.ttd@tirumala.org / www.tirumala.org वेबसाइट में भी दरसा सकेंगे)
दूरभाषा - 0877-2263001 & 0877-2263472.

(सूचना - उपर्युक्त विषयों पर परिवर्तन होनी की संभावना है।)

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५४ दिसंबर-२०२३ अंक-०७

विषयसूची

आयुर्वेद आचार्य भगवान धन्वंतरी	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालीया	07
वैकुंठ एकादशी	श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालीया	10
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	13
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	16
रामो विग्रहवान धर्मः	प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	19
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	24
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	31
च्यवन ऋषि	डॉ.जी.सुजाता	32
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	36
शकुंतला	डॉ.के.एम.भवानी	38
श्रीमद्भगवद्गीता का कथन	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	42
सेब का आरोग्य में लाभ	डॉ.सुमा जोषि	44
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	श्री अवधेष कुमार शर्मा	46
दिसंबर महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - नाम मंत्र स्मरण का महत्व	श्रीमती प्रेमा रामनाथन	48
चित्रकथा - गधा भी गुरु है!	श्री के.रामनाथन	50
क्विज - 17		52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - स्वर्ण रथयात्रा, तिरुमल।

चौथा कवर पृष्ठ - अर्जुन के साथ भगवान श्रीकृष्ण।

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मरिड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

परम पवित्र मास 'धनुर्मास'

भक्तवत्सल भगवान श्री महाविष्णु के देवेरि भूदेवी ने भूलोक में एक अयोनिज के रूप में एक नन्हें की बच्चे के रूप में तुलसी वन में पैदा होकर पेरियाल्वार (विष्णुचित्त) को दिखाया था। उन्होंने पिता के रूप में इनका पालन-पोषण किया। आंडाल (गोदादेवी) अपने पिताजी के द्वारा भगवान श्री महाविष्णु के विविध रूप-वर्ण-वैभव के कथांश को सुनकर बढ़ गयी है। 'तिरुप्पावै', 'नाच्चियार तिरुमौलि' नामक दो पवित्र ग्रंथों को गोदादेवी ने लिखा था। बारह आल्वारों में आंडाल अकेली ही एक स्त्री मूर्ति है। आंडाल ने अपने सहेलियों के साथ करने वाली 'कात्यायनी व्रत' विधान, आराधन... ये सब कुछ 'तिरुप्पावै' नामक पवित्र ग्रंथ में वर्णित किया। इतना पवित्र ग्रंथ सर्वोत्कृष्ट स्थान को पायी है।

दक्षिणायन के अंतिम समय और उत्तरायण का प्रारंभ के काल को धनुर्मास के नाम से जाना जाता है। इस धनुर्मास के समय में तिरुमल पुण्य धाम में हर दिन पठन करनेवाली 'सुप्रभात' के स्थान में 'तिरुप्पावै' के एक एक पाशुर को एक एक दिन पाठन करते है। इस चर्या से देवी माँ आंडाल और भगवान बालाजी का संबंध अटूट है। और एक उदाहरण के रूप में कहे तो ब्रह्मोत्सव के समय तमिलनाडु में स्थित श्रीविल्लिपुत्तूर, आंडाल देवी माँ के मंदिर से फूल माला लाकर तिरुमल गरुडोत्सव के वाहन सेवा में भगवान श्री मलयप्पस्वामी जी को धारण करना एक सांप्रदायिक रूप में चालू हो रहा है।

इस धनुर्मास के समय में ति.ति.दे. ने स्थानीय रूप में स्थित सभी श्रीवैष्णव मंदिरों में 'तिरुप्पावै' के प्रवचन गान करने के लिए प्रवचन कर्त्ता को चुना कर तीस दिनों तक तिरुप्पावै पर व्याख्यान सहित वर्णन आम जनता को पहुँचाने के लिए विशेष योगदान कर रहे है। उत्तरायण आरंभ काल में सूर्य मकर राशि प्रवेश से धनुर्मास समाप्त होता है। तिरुमल में गोदा परिणय भी संपन्न करते है। भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है कि मासों में स्वयं मार्गशिर मास मैं ही हूँ। इतना परम पवित्र पुण्य काल धनुर्मास में श्री महाविष्णु की आराधन कैसा करना है आंडाल स्वयं 'कात्यायनी व्रत' विधान को पालन करके हमको दिखाया था।

इस समय में करने वाले जप, तप, ध्यान, व्रत, स्नान, दान ये सब इह-पर सुखों के साथ भगवान सान्निध्य पहुँचाने का कारक बन जाता है।

ओम नमो वेंकटेशाय।

आयुर्वेद आचार्य भगवान धन्वंतरी

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालीया

हिंदू मान्यता के अनुसार श्री धन्वंतरी भगवान विष्णु के अवतार हैं जिन्होंने आयुर्वेद का प्रवर्तन किया। पृथ्वी लोक में इनका अवतरण समुद्र मन्थन के समय में हुआ था। शरदपूर्णिमा को चन्द्रमा, कार्तिक द्वादशी को कामधेनु गाय, त्रयोदशी को धन्वंतरी, चतुर्दशी को काली माता और अमावास्या को भगवती महालक्ष्मी जी का सागर से प्रादुर्भाव हुआ था। इसीलिये दीपावली के दो दिन पूर्व भगवान धन्वंतरी का अवतरण को धनतेरस के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन इन्होंने आयुर्वेद का भी प्रादुर्भाव किया था।

धन्वंतरी मंत्र

ॐ नमो भगवते महासुदर्शनाय वासुदेवाय धन्वन्तरये

अमृतकलशहस्ताय सर्वभयविनाशाय सर्वरोगनिवारणाय

त्रैलोक्यपतये त्रैलोक्यनिधये श्रीमहाविष्णुस्वरूपाय श्रीधन्वन्तरीस्वरूपाय

श्री श्री श्री औषधचक्राय नारायणाय नमः।

भगवान विष्णु का रूप माने जाने वाले श्री धन्वंतरी की चार भुजायें जिनमें ऊपर की दोनों भुजाओं में शंख और चक्र तथा दो अन्य भुजाओं में से एक में जलूका और औषध एवं दूसरे में अमृत कलश लिये हुये हैं। इनका प्रिय धातु पीतल माना जाता है। इसीलिये धनतेरस को पीतल आदि के बर्तन खरीदने की परम्परा भी है। आयुर्वेद के चिकित्सक इन्हें आरोग्य देवता भी कहते हैं। इन्होंने ही अमृतमय औषधियों की खोज की थी। इनके वंश में दिवोदास हुए जिन्होंने 'शल्य चिकित्सा' का विश्व का पहला विद्यालय काशी में स्थापित किया जिसके प्रधानाचार्य सुश्रुत बनाये गए थे। सुश्रुत दिवोदास के ही शिष्य और ऋषि विश्वामित्र के पुत्र थे। उन्होंने ही सुश्रुत संहिता लिखी थी। सुश्रुत विश्व के

पहले सर्जन (शल्य चिकित्सक) थे। दीपावली के अवसर पर कार्तिक त्रयोदशी-धनतेरस को भगवान धन्वंतरी की पूजा करते हैं। त्रिलोकी के व्योम रूपी समुद्र के मंथन से उत्पन्न विष का महारुद्र भगवान शंकर ने विषपान किया, धन्वंतरी ने अमृत प्रदान किया और इस प्रकार काशी कालजयी नगरी बन गयी।

आयुर्वेद के संबंध में सुश्रुत का मत है कि ब्रह्माजी ने पहली बार एक लाख श्लोक के, आयुर्वेद का प्रकाशन किया था जिसमें एक सहस्र अध्याय थे। उनसे प्रजापति ने पढ़ा। तदुपरांत उनसे अश्विनीकुमारों ने पढ़ा और उन से इन्द्र ने पढ़ा। इन्द्रदेव से धन्वंतरी ने पढ़ा और उन्हें सुन कर सुश्रुत मुनि ने आयुर्वेद की रचना की। भावप्रकाश के अनुसार आत्रेय आदि मुनियों ने इन्द्र से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त कर उसे अग्निवेश तथा अन्य शिष्यों को दिया।

विध्यातार्थर्व सर्वस्वमायुर्वेदं प्रकाशयन्।

स्वनाम्ना संहितां चक्रे लक्ष श्लोकमयीमृजुम्।।

इसके उपरान्त अग्निवेश तथा अन्य शिष्यों के तंत्रों को संकलित तथा प्रतिसंस्कृत कर चरक द्वारा 'चरक संहिता' के निर्माण का भी आख्यान है। वेद के संहिता तथा ब्राह्मण भाग में धन्वंतरी का कहीं नामोल्लेख भी नहीं है। महाभारत तथा पुराणों में विष्णु के अंश के रूप में उनका उल्लेख प्राप्त होता है।

उनका प्रादुर्भाव समुद्रमन्थन के बाद निर्गत कलश से अण्ड के रूप में हुआ। समुद्र के निकलने के बाद उन्होंने भगवान विष्णु से कहा कि लोक में मेरा स्थान और भाग निश्चित कर दें। इस पर विष्णु ने कहा कि यज्ञ का विभाग तो देवताओं में पहले ही हो चुका है अतः यह अब संभव नहीं है। देवों के बाद आने के कारण तुम (देव) ईश्वर नहीं हो। अतः तुम्हें अगले जन्म में सिद्धियाँ प्राप्त होंगी और तुम लोक में प्रसिद्ध होगे। तुम्हें उसी शरीर से देवत्व प्राप्त होगा और द्विजातिगण तुम्हारी सभी तरह से पूजा करेंगे। तुम आयुर्वेद का अष्टांग विभाजन भी करोगे। द्वितीय द्वापर युग में तुम पुनः जन्म लेंगे इसमें कोई संदेह नहीं है।

इस वर के अनुसार पुत्रकाम काशिराज धन्व की तपस्या से प्रसन्न हो कर अब्ज भगवान ने उसके पुत्र के रूप में जन्म लिया और धन्वंतरी नाम धारण किया। धन्व काशी नगरी के संस्थापक काश के पुत्र थे। वे सभी रोगों के निवारण में निष्णात थे। उन्होंने भरद्वाज से आयुर्वेद ग्रहण कर उसे अष्टांग में विभक्त कर अपने शिष्यों में बाँट दिया।

धन्वंतरी की परंपरा इस प्रकार है- काश-दीर्घतपा-धन्व-धन्वंतरी-केतुमान्-भीमरथ(भीमसेन)-दिवोदास-प्रतर्दन-वत्स-अलर्क। यह वंश-परम्परा हरिवंश पुराण के आख्यान के अनुसार है। विष्णुपुराण में यह थोड़ी भिन्न है - काश-काशेय-राष्ट्र-दीर्घतपा-धन्वन्तरी- केतुमान्-भीरथ-दिवोदास।

महिमा

वैदिक काल में जो महत्व और स्थान अश्विनी को प्राप्त था वही पौराणिक काल में धन्वंतरी को प्राप्त हुआ। जहाँ अश्विनी के हाथ में मधुकलश था वहाँ धन्वंतरी को अमृत कलश मिला, क्योंकि विष्णु संसार की रक्षा करते हैं अतः रोगों से रक्षा करने वाले धन्वंतरी को विष्णु का अंश माना गया। विषविद्या के संबंध में कश्यप और तक्षक का जो संवाद महाभारत में आया है, वैसा ही धन्वंतरी और नागदेवी मनसा का ब्रह्मवैवर्त पुराण में आया है। उन्हें गरुड़ का शिष्य कहा गया है।

सर्ववेदेषु निष्णातो मन्त्रतन्त्र विशारदः।

शिष्यो हि वैनतेयस्य शङ्करोस्योपशिष्यकः।।

मंत्र

भगवान धन्वंतरी की साधना के लिये एक साधारण मंत्र है :

ॐ धन्वंतरये नमः।।

इसके अलावा उनका एक और मंत्र भी है :

ॐ नमो भगवते महासुदर्शनाय वासुदेवाय धन्वन्तरये अमृतकलशहस्ताय सर्वभयविनाशाय सर्वरोगनिवारणाय त्रिलोकपथाय त्रिलोकनाथाय श्री महाविष्णुस्वरूपाय श्रीधन्वन्तरीस्वरूपाय श्री श्री श्री औषधचक्राय नारायणाय नमः।।

ॐ नमो भगवते धन्वन्तरये अमृतकलशहस्ताय सर्व आमय विनाशनाय त्रिलोकनाथाय श्रीमहाविष्णुवे नमः

अर्थात परम भगवान को, जिन्हें सुदर्शन वासुदेव धन्वंतरी कहते हैं, जो अमृत कलश लिये हैं, सर्वभय नाशक हैं, सभी रोगों के नाश करते हैं, तीनों लोकों के स्वामी हैं और उनका निर्वाह करने वाले हैं; उन विष्णु स्वरूप धन्वंतरी को नमन है।

धन्वंतरी स्तोत्र

ॐ शङ्खं चक्रं जलौकां दधदमृतघटं चारुदोर्भिश्चतुर्भिः।

सूक्ष्मस्वच्छातिहृद्यांशुक परिविलसन्मौलिमम्भोजनेत्रम्।।

कालाम्भोदोज्ज्वलाङ्गं कटितटविलसच्चारुपीताम्बराढ्यम्।

वन्दे धन्वन्तरिं तं निखिलगदवनप्रौढदावाग्निलीलम्।।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति – 517 507. चित्तूर जिला।

वैकुंठ एकादशी

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालीया

वैकुंठ एकादशी (संस्कृत : वैकुंठ एकादशी, शाब्दिक अर्थ 'वैकुंठ का ग्यारह वाँ दिन') एक हिंदू अवसर और त्योहार है। यह मुख्य रूप से वैष्णवों द्वारा मनाया जाता है, जो इसे एक विशेष एकादशी मानते हैं। यह मोक्षदा एकादशी या पुत्रदा एकादशी के साथ मेल खाता है। यह मार्गशिर माह के शुक्ल पक्ष के 11वें दिवस पर मनाया जाता है।

दंतकथा

वैकुंठ एकादशी की उत्पत्ति का उल्लेख पद्म पुराण की एक कथा में मिलता है। एक बार मुरासुर नाम का एक असुर था, जो ब्रह्म से प्राप्त वरदान के कारण देवताओं के लिए एक दुःस्वप्न था। उन्होंने विष्णु की सहायता मांगी, जिन्होंने युद्ध में असुर के खिलाफ लड़ाई लडी, लेकिन उसे हराने में असमर्थ रहे। उन्होंने बदरिकाश्रम के आस-पास सिम्हावती नामक गुफा की यात्रा की, जहाँ मुरासुर ने उनका पीछा किया था। वहाँ, विष्णु ने अपनी दिव्य ऊर्जा से निर्मित देवी योगमाया को बुलाया, जिन्होंने असुर का वध किया। प्रसन्न होकर विष्णु ने देवी को 'एकादशी' की उपाधि दी और घोषणा की कि वह पृथ्वी के सभी लोगों के पापों को नष्ट करने में सक्षम होंगी। वैष्णव परंपरा में, यह माना जाता है कि जो लोग इस अवसर पर व्रत रखते हैं और एकादशी की पूजा करते हैं उन्हें वैकुंठ की प्राप्ति होती है। इस प्रकार पहली एकादशी अस्तित्व में आई, जो धनुर्मास शुक्ल पक्ष की एकादशी थी। एक बात की कहानी के अनुसार, आयोध्या के अंबरीश नामक एक वैष्णव राजा थे, जो हमेशा इस अवसर पर उपवास करने का व्रत रखते थे। एक बार, इस अवसर पर तीन दिनों के उपवास के बाद, वह अपना उपवास तोड़ने ही वाले थे, तभी ऋषि दुर्वासा ने उन्हें प्रणाम किया अपने नगर के द्वार पर प्रकट हुआ। राजा ने ऋषि का सम्मानपूर्वक स्वागत किया, और उन्हें भोजन की व्यवस्था की, जिसे ऋषि ने स्वीकार कर लिया, लेकिन पहले जाकर स्नान किया। काफी देर तक अंबरीष के इंतजार करने के बाद भी ऋषि वापस नहीं आए और उनका व्रत तोड़ने का शुभ घडी आ गया। उसे एक दुविधा का सामना करना पड़ा। यदि उसने दिन समाप्त होने से पहले अपना उपवास नहीं तोडा, तो उसके उपवास का फल नहीं मिलेगा; हालाँकि, अगर उन्होंने दुर्वासा के लौटने से पहले भोजन का एक भी टुकडा खाया, तो इसे अपमानजनक माना जाता था। उन्होंने बस थोडा पानी पीने का फैसला किया, जिससे उनका उपवास टूट गया, लेकिन उम्मीद थी कि यह ऋषि के लिए अपमानजनक साबित नहीं होगा। जब दुर्वासा वापस लौटे तो क्रोधित हो गए और उन्होंने अपने सिर से बालों का एक गुच्छा तोड़ लिया, जिसे राजा पर हमला करने के लिए भेजा गया था। सुदर्शन चक्र विष्णु ने झुरमुट को नष्ट करने के लिए हस्तक्षेप किया, जो

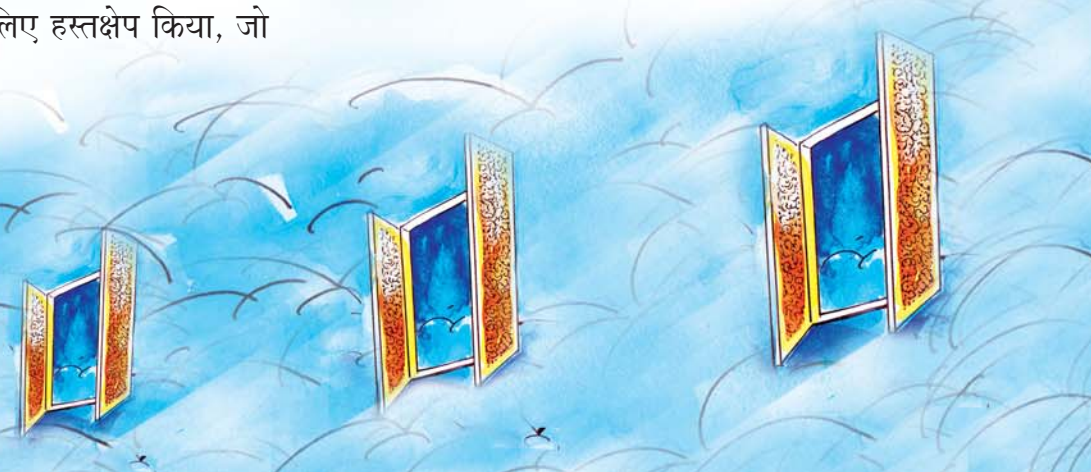

फिर ऋषि का पीछा करने के लिए आगे बढ़ा। दुर्वासा भाग गए, ब्रह्म और शिव से रक्षा लेने का प्रयास किया, लेकिन दोनों देवताओं ने उन्हें शरण देने से इनकार कर दिया। अंत में, दुर्वासा ने स्वयं विष्णु से अपने जीवन की भीख मांगी, जिन्होंने उन्हें सूचित किया कि उनका उद्धार उनके भक्तों के हाथों है। तदनुसार, दुर्वासा ने अंबरीष से क्षमा मांगी और बच गये।

एक अन्य किंवदंती के अनुसार, विष्णु ने अपने विरोधी होने पर भी उन दो असुरों (राक्षसों) के लिए वैकुंठ (अपना निवास) का द्वारा खोल दिया। उन्होंने यह वरदान भी मांगा। जो कोई भी उनकी कहानी सुनेगा, और वैकुंठ द्वारम नामक द्वार से बाहर आते हुए विष्णु की छवि को देखेगा, वह भी वैकुंठ पहुँच जाएगा। पूरे भारत में मंदिर इस दिन भक्तों के प्रवेश के लिए एक दरवाजे की तरह की संरचना बनाते हैं।

महत्व वैष्णव

वैकुंठ (विष्णु के भक्त) मानते हैं कि इस दिन ''वैकुंठ द्वारम'' (वैकुंठ का द्वार) खोला जाता है। चंद्र कैलेंडर में मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की एकादशी को 'मोक्षदा एकादशी' के नाम से जाना जाता है। कई विष्णु मंदिरों में वेदों से विशेष प्रार्थनाएँ, नालायिर दिव्य प्रबंधम, श्रीवैकुंठ गध्यम साथ ही वैकुंठ द्वार पूजा, प्राकारोत्सवम् (श्री वेलि), ऊँजल सेवा (झूलन पूजा), ऊँजल प्रबंधम, यज्ञ, प्रवचन और भाषण की व्यवस्था की जाती है। इस शुभ दिन पर दुनिया भर में वैकुंठ हिंदू संरक्षक देवता, विष्णु के निवास को संदर्भित करता है। वैष्णव विष्णु के चरणों को विष्णुपद, या परम पदम (परम चरण) मानते हैं, क्योंकि यह विष्णु और उनके भक्तों के लिए शुद्ध-सत्व, या पवित्रता और अच्छाई की सर्वोच्च स्थिति में निवास करने का क्षेत्र माना जाता है।

विष्णु मंदिरों में, वैकुंठ एकादशी धनुर्मास (मार्गी) व्रतम और उसकी पूजा का अभिन्न अंग है। धनुर्मास के पूरे महीने में उपवास का अभ्यास कई वैष्णवों द्वारा किया जाता है, जिसमें श्रीवैष्णवों के लिए संयम और भोजन प्रतिबंध शामिल हैं।

विष्णु पुराण के अनुसार, वैकुंठ एकादशी का व्रत हिंदू वर्ष की शेष 23 एकादशियों के व्रत के

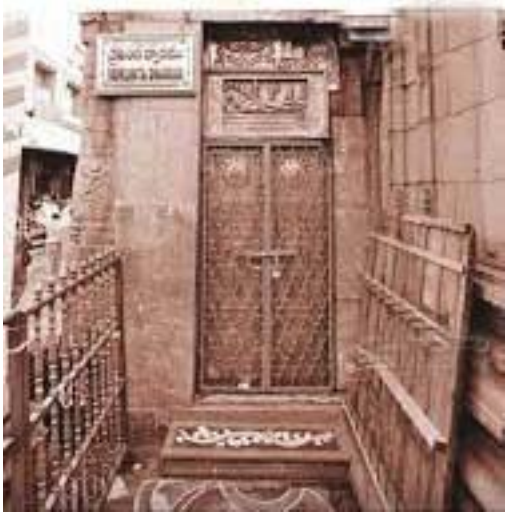

बराबर है। हालाँकि, वैष्णव परंपरा के अनुसार, शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष दोनों की सभी एकादशियों पर उपवास अनिवार्य है। किसी भी अन्य धार्मिक व्रत की तुलना में एकादशी का उपवास अधिक पवित्र माना जाता है। पक्ष के 11वें दिन यानी एकादशी को पूर्ण व्रत रखना होता है। इसीलिए द्वादशी (12वें दिन) का भोजन पौष्टिक और तृप्तिदायक बनाया जाता है।

उपवास

वैकुंठ एकादशी व्रत इससे जुडे लोगों का एक महत्वपूर्ण पहलू है। लोग पूरे दिन उपवास करते हैं और रात्रि जागरण करते हैं। विष्णु की विशेष प्रार्थना की जाती है और भक्त जप (विष्णु के नाम का जाप) और ध्यान में संलग्न होते हैं। एकादशी पर, उपवास रखना होता है और विष्णु की प्रार्थना और ध्यान में संलग्न रहना होता है। उन्हें चावल लेने की सख्त मना ही है, उस रात, लोग पूरी रात जागते हैं और विष्णु के मंदिर में जाते हैं, ज्यादातर उनके संप्रदाय के अनुसार पूजा करते हैं।

जय श्रीमन्नारायण।

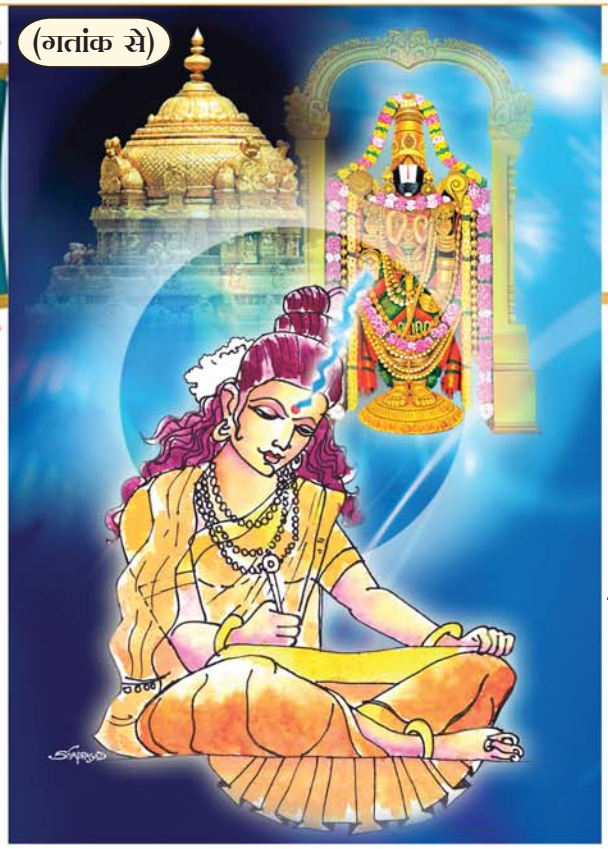

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तृतीय आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

नैऋति-पश्चिम दिशाएँ :

सारी सेना के साथ मिल कर जयभेरी बजाकर बडे उत्साह और उल्लास के साथ निकल कर नैऋति प्रदेश के लिए चक्रराज निकल पडे। यात्रा के दौरान ही दुर्गों में छिपे राक्षसों को ढूंढ ढूंढ कर निकाल कर उन का संहार करते हुए फिर पश्चिम दिशा में आगे बढे। चक्रराज ने तब अपने चतुरंग बलों के साथ वहाँ युद्ध-भेरी बजायी। तदुपरांत राक्षसों को पकडने के लिए दुर्गों को छान मारना शुरू किया। अनेक चोरों को मारने के बाद बचे हुए बाकी चोर भय से तितर बितर होकर अपने प्रभु के पास पहुँचे। फिर अपनी बाधाओं के बारे में प्रभु से इस रूप में अवगत कराया। ''हे प्रभु! कहीं से बडी सेना यहाँ पर आयी है। सारे चोरों को मारने लगी है।'' यह सुन कर राक्षसों के प्रभु को बहुत गुस्सा आया। अत्यंत कुपित होकर इस रूप में कहा। ''शिव को लेकर महातप करके किसी के हाथों में नहीं मरने का वरदान प्राप्त किया। अपने सहचर चोरों को इकट्ठा करके साधु जनों को सतानेवाले निर्बल राहगिरों को मार कर उन की संपदाओं को लूटनेवाला लुटेरा, कालकिंकर नामक सहचरों को साथ में रखनेवाले बलवान, जंगल में रहनेवाले रिपुघ्न नामक राक्षस के पुत्र वनकर्ता नामक राक्षस को बहुत बडा गुस्सा आया। तब उस ने 'शूल, सींग, तुडुम आदि को बजाते शत्रुओं पर टूट पडो' आदेश दिया। उस के सारे सहचर तितर बितर न होकर गदा, शूल, मुद्गर आदि आयुधों को धारण करके युद्ध के लिए तैयार हो गए। अपने सामने की तरफ से आनेवाले इन राक्षसों को देखकर चक्र राज के सैनिकों ने उन पर अपने आयुधों के साथ दावा बोल दिया। अतिघोर युद्ध किया। अनेक अक्षोहिणी किरात बलों का संहार किया। तब रक्त वहाँ पर नदियाँ बन कर बहने लगी। इसे देखकर वनकर्ता महोग्र हो गए। क्रोधी बन कर अपने सेनाधिपति ज्वालापात को देखकर उसने इस रूप में कहा।

''असमान शूर अक्षोहिणी वीरों को वैरी सेना ने मार दिया है। इसलिए आप करवाल, शूलादि साधनों के साथ उन का संहार करो।'' इस रूप में आदेश पाकर ज्वालापात नामक राक्षस अनेक आयुध धारण करके

युष्ट्रली के द्वारा बनाये गए रथ पर आरूढ होकर चक्र राज पर टूट पडा। तब चक्र राज ने बडभामुख की ओर देखकर इस रूप में कहा। ''हे शूरवर्य! तुम युद्ध करने जाकर किरात के राजा के दलपति को मार गिराओ। ये नीच जन है, हे पुण्यात्मा! ऐसी उपेक्षा न करके अतिशीघ्र ही इन पापात्माओं का संहार करो।'' चक्र राज के इस रूप में कहने पर सुन कर बडभामुख विपुल आयुध लेकर ज्वाला पात के रथ पर टूट पडा। उस के रथ को तोड डाला। उस का संहार कर दिया।

तब चक्रराज ने अपने चक्र को उठाकर गहनकर्ता नामक राक्षस पर प्रयोग किया। तब चक्र ने उस के सर को काट कर धरती पर मार गिराया। इस प्रकार बडभानल समुद्र के जल को पीने की तरह उस वनकर्ता की सेना को चक्र राज ने शस्त्रास्त्र से नष्ट कर दिया। तब पृथ्वी निष्कंटक बनी। तब चक्र राज ने जंगल के उन वृक्षों को जो रास्ते के कंटक बने थे, कटवाकर सकल भक्त जनों को शेषाचल पर पहुँचने के मार्ग को प्रशस्त किया। साथ उस मार्ग में पुण्यात्माओं की नियुक्ति भी की। भक्त जनों की रक्षा करने के दायित्व को उन्हें सौंप दिया। राजा की नियुक्ति भी करके 'धर्मानुसर जन पर शासन करने' का आदेश दिया।

वायव्य और उत्तर दिशाएँ :

फिर चक्र राज जयभेरी बजाकर चतुरंग बलों को इकट्ठा करके, उन के द्वारा स्तुति पाकर उत्साह के साथ वायव्य दिशा में रहनेवाले चोरों का निरोध करते हुए गाडांधकार फैलानेवाले कंटक राक्षस रहनेवाली उत्तर दिशा की ओर आगे बढा। सहस्र करों के साथ, दीर्घ सहस्र करों के साथ दूसरे प्रचंड मार्तांड बनकर वेंकटाद्री के उत्तर भाग में पहाडों के बीच में महोग्र होकर युद्ध के लिए तैयार होकर चक्र राज निकला। ऐसे चक्र राज को देखकर डर कर कुछ राक्षसों ने अपने प्रभु भेरुंड के पास पहुँच कर इस रूप में कहा। ''हे प्रचंड प्रताप! भेरुंड प्रभु स्वामी! अत्यंत अद्भुत ढंग से एक वीर चतुरंग बलों के साथ मिल कर आया है। कालाग्नि और रुद्र की तरह है। विकराल सहस्र हाथों के साथ है। रक्त वर्ण का वस्त्र पहना हुआ है। हार, किरीट, केयुर आदि भूषण धारण किया हुआ है। बडे रथ पर आरूढ हुआ है। सूर्य की तरह प्रकाशवान है। उसे देखते ही डर लग रहा है।'' इस रूप में बताने पर भेरुंड राक्षसों के साथ वहाँ गया। वहाँ चक्रराज को देखकर महोग्र हो गया। उसने तब कहा। 'मैं ही यहाँ का राजा हूँ।' फिर अपने सहचर राक्षसों को देखते हुए कहा। ''हे रक्षोवर! देखिए इस उत्पात को। मुझे हराने के लिए आए इसे मार कर रावण को भेंट के रूप में दूंगा। मेरा भेरुंड नाम को धरती पर सार्थक करूँगा।'' ऐसे डींग हांकते हुए अपने चतुरंग बलों को चक्रराज के चतुरंग बलों पर दावा बोलने का आदेश दिया। तब चक्र राज के चतुरंग बल घोर रणभेरी बजा कर अट्टहास करते हुए युद्ध करना शुरू किया। मारने आए भेरुंड बलों को विरोध करते बिना हडबडाहट के अलग अलग युद्ध करने लगा। करवाल, शूल, कुंत, मूसल, मुद्गर, खिंडिवाल, परशु, तोमर, पट्टिस, परिघाद्य आदि आयुध धारण करके एक दूसरे को काटते, बचाते, भागते, भगाते, हूंकारते, डींग हांकते, मारते, गालियाँ देते, बडबोली करते, ओंट काटते, दांते निपोरते, आंखों से परिहास करते, धिक्कार करते, कुचलते, खांसते, डराते धमकाते ऐसे अनेक प्रकार से दक्षिणोत्तर सागरों की तरह एक दूसरे पर टूट पडे। तब दोनों तरफ के लोगों के शरीर, गले, जांघे, हाथ, पैर, कमर, नसें आदि के कट जाने से नीचे गिर कर लुढकनेवाले, प्राण छोडनेवाले, रोनेवालों से युद्ध भूमि फूले हुए फलाश वृक्षों की तरह भयानक लग रही थी। घायल हुए लोगों के शरीर से रक्त नदियाँ बन कर बह रहा था। सैनिकों के शरीर के भागों के साथ युद्ध सामग्री के टूटने से वे दृश्य अत्यंत भयानक लग रहे थे। टूटी तलवारे, टूटे रथ, गिर पडे घोडे, हाथी,

शूल, गदादि से रण क्षेत्र भर गया था। ये सारे रक्त की नदियों में बहते दिखाई पड रहे थे। तब वहाँ भूत प्रेत 'चक्र राज ने हमारे लिए समाराधन किया है। आइए' एक दूसरे को बुलाते गिर पडे शवों को खाते आंतडियों को निकाल कर निगलते, भूत प्रेत कटी हुई खोपडियों को अनेक बार रक्त में भिगो कर खा रहे थे। खा, पीकर पेट को सहलाते, डकारते और लुढकनेवाले भूत प्रेतों से रणक्षेत्र भीषण और भयंकर लग रहा था।

तब चक्र राज ने भेरुंड राक्षस को देखकर बहुत गुस्सा किया। तब भेरुंड ने महोग्र होकर हतशेष बलों के साथ चक्रराज पर आक्रमण किया। चक्र राज ने भी भौहें चढाकर नेत्रों से विष्फुलिंग निकालते भेरुंड को देखकर हुँकार किया। उस हुँकार ध्वनि से धरणी कांपने लगी। तब मानो आकाश गिरा। दिशाएँ धंस गयीं। महान पहाड कांपने लगे। सूर्य-चंद्र अपनी गतियों से अलग हुए। दैत्यों के हृदय हिलने लगे। मानो ब्रह्मांड भांड टूट गया हो। तेज हवाएँ चलने लगीं। तब चक्र राज ने पावक नामक वीर का सृजन करके शत्रुओं पर छोडा। पावक ने शत्रु बल पर अतिशय रूप में आक्रमण करके सम्मोहन अस्त्र का प्रयोग किया। तब राक्षसों ने अपने आप से लड कर मर कर नीचे गिरे। चक्र राज ने इस दृश्य को देखकर दया करके 'यह अधर्म है। इसलिए तुम इस बाण को और आगे जाने न देकर उपसंहार कर लो।' तब पावक ने अपनी विद्या से उसे वापस लिया। पावक ने फिर दैत्यों पर कौंच बाण छोडा। तब उसने उन की नाक-कान को काट लिया। इसे देखकर भेरुंड को बहुत रोष हुआ। तब उस ने भीकर रूप में पावक पर आक्रमण किया। तब पावक ने उस पर मारुतास्त्र को छोडा। तीन योजन शरीरवाले भेरुंड को उस अस्त्र ने उठा ले कर वेंकट पहाड की तीन बार परिक्रमा करवाकर धरती पर गिरा दिया। सडे हुए कुष्मांड की धरती पर गिरने की तरह राक्षस पिस गया। चक्र ने उस के सारे बलों को काट दिया। तब देवतागण ने चक्र राज पर फूलों की वर्षा की। देवतागण ने साक्षात उसे दर्शन देकर उन की स्तुति करके इस रूप में कहा। ''हे चक्रराज! तुम ने सारे दुष्टों का संहार करके साधु जनों की रक्षा करने के कारण पुरुषोत्तम स्वामी आप से अत्यंत प्रसन्न हो गए। अब तुम शांत हो जाओ। हे महात्मा! आप की प्रशंसा करना ब्रह्मादि को भी संभव नहीं है। आप ने दुष्टों का संहार करके शिष्टों की रक्षा की है। अब इस प्रयत्न को छोडकर शांत होकर श्री वेंकटेश्वर स्वामी की सन्निधि में पहुँच जाओ।'' कहते देवतागण लौट गए। तब चक्र राज ने निज योग बल से युद्ध क्षेत्र में मरे अपने चतुरंग बलों को जीवित किया। इस रूप में उन पर संतोष के साथ करुणा-कटाक्ष किया। तब वे भी शांत होकर पूर्व की तरह चक्रराज की पूजा करने लगे। तब उत्तर भाग से श्री वेंकटाद्री पर पहुँचने भक्तों के लिए आवश्यक मार्ग को सुगम किया। साथ ही सज्जनों की नियुक्ति की। उन के संरक्षण के लिए राजा की नियुक्ति भी की। 'वेंकटाद्री पर आनेवाले भक्त जनों का आदर करते रहिए।' ऐसा आदेश भी उसे दिया।

क्रमशः

श्री प्रपन्नामृतम्

(45वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

चेलांचलाम्बा का वृत्तान्त

श्रीवैष्णवों के आगमन से प्रसन्न होकर साध्वी श्रीवैष्णवी चेलांचलाम्बा उनका अर्घ्य, पाद्य, आसन और नमस्कार के द्वारा स्वागत सत्कार करके उनसे प्रेमपूर्वक बोली- ''आज मेरा अहोभाग्य है! जो आप श्रीवैष्णव महात्माओं ने कृपा करके मेरे गृह को पवित्र किया है। अब मैं आप लोगों के लिये षड्रस युक्त भोजन बनाकर आपको समर्पण करूँगी। इतने समय आप मार्ग की थकावट मिटाने के लिये सुखपूर्वक विश्राम कीजिये।'' उस वैष्णवी के श्रद्धायुक्त वचनों को सुनकर वैष्णवों ने कहा- ''हे दयामयी माता! तुम्हारे ममतामय वचनों को सुनकर हम परम सन्तुष्ट हो गये हैं। भोजन बनाने के लिये तुम क्यों वृथा श्रम कर रही हो।'' यह सुनकर वह साध्वी हाथ जोड़कर बोली- ''आप लोग किसी प्रकार का भी संदेह न करें। मैं भी यतिराज श्री रामानुजाचार्य की ही शिष्या हूँ एवं उनके चरणों का संबंध मैंने प्राप्त किया है। इस दासी पर यतिराज ने कैसे कृपा की, यह घटना मैं पहले आप लोगों को सुनाती हूँ। इसे सावधानीपूर्वक श्रवण करें।'' यह कहकर वह बोली कि- ''एक समय में बारह वर्षों तक निरंतर हमारे प्रदेश में वर्षा न होने के कारण भयंकर अकाल पड़ा, जिससे सभी लोग व्याकुल हो गये और यह प्रदेश छोड़कर जीविका के लिये अन्यत्र जाने लगे। उस समय मैं भी अपने पतिदेव के साथ श्रीरंगधाम में चली गयी थी। वहाँ पर मैं एक दिन एक मकान की छत पर खड़ी हुई थी, उस समय मैंने भिक्षाटन के लिये जाते हुये यतिराज का सर्वप्रथम दर्शन किया। तब यतिराज सात वैष्णवों के घरों से मधुकरी माँगकर भोजन करते थे। अनेकों राजा महाराज, वेद-वेदांत, विज्ञ, विद्वान, श्रीवैष्णव ब्राह्मण उनकी पूजा के लिये प्रतिदिन आते थे। यह देखकर मैं भी छत से नीचे आई और मार्ग में खड़ी होकर यतिराज का मार्ग रोकते हुये मैंने पूछा कि- ''हे भगवान! आप तो भिक्षाटन करके अपना योगक्षेत्र चलाते हैं। अर्थात् आप अकिंचन हैं, आपके पास कुछ नहीं है। फिर भी यह अनेकों राजा-महाराजा, वेद-वेदान्त-निष्णात ब्राह्मण आपको श्रीरंगनाथ भगवान के समान मानकर क्यों पूजते हैं? इसका कारण मुझे बतलाइये।'' यह सुनकर यतिराज बोले- ''बेटी! उन लोगों को मैंने भगवत् संबंधी सुंदर मंत्ररत्न का उपदेश दिया है, इसलिये वे सभी लोग मेरा

कैंकर्य करते हैं।'' तब मैं बोली कि- ''यदि ऐसा ही है तो आप मुझे भी उस मंत्र का उपदेश अवश्य दीजिये।'' मेरी प्रार्थना को स्वीकार करके यतिराज ने कृपापूर्वक मुझे श्रीवैष्णवी दीक्षा दी। तब से मैं निरंतर उस मंत्र का अनुसंधान, उनके चरणों का ध्यान एवं उनके द्वारा बताये गये नियमों का बराबर पालन करती आ रही हूँ। जब हमारे प्रदेश में वर्षा न होकर सुभिक्ष हो गया तब हम दोनों पति-पत्नी ने यहाँ आने का निश्चय किया, तब मैं फिर यतिराज के पास गयी और मैंने उनसे निवेदन किया कि आपके द्वारा प्रदत्त मंत्र मुझे विस्मृत हो गया है। अब मैं अपने पति के साथ स्वदेश को जा रही हूँ। अतः अब दासी पर पुनः कृपा करके उम मंत्र का उपदेश एवं अपनी चरण पादुकायें प्रदान कर उद्धार कीजिये।'' इस प्रार्थना को सुनकर यतिराज ने कृपापूर्वक पहले गुप्त परंपरा, तदनंतर द्वयमंत्र का समुचित उपदेश एवं अपनी चरण-पादुकायें देकर मुझे कृतार्थ किया।''

''उस समय मैंने गुरुदेव के दर्शन किये थे, अब पुनः उन यतिराज के श्रीविग्रह का अब अवलोकन करूँगी।'' यह कहते-कहते साध्वी चेलांचलाम्बा के नेत्र आँसुओं से भर गये, और वह रोने लगी।

इस वृत्तान्त को हृदयंगम करते हुये यतिराज बड़े प्रसन्न हुये और साध्वी शिष्या से बोले कि- ''अच्छा तुम भोजन बनाओ।'' यह कहकर शिष्यों को आदेश दिया कि-अब आप लोग देखिये कि वह किस प्रकार भोजन बनाती है। शिष्यों ने आदेश का पालन करते हुए देखा कि उस साध्वी ने स्नान करके दूसरे स्वच्छ वस्त्र धारण किये और ''श्री रामानुजाचार्य के चरणारविन्द ही मेरे शरण्य हैं।'' यह कहकर आदरपूर्वक उन्हें नमस्कार कर भोजन बनाया और फिर ठाकुरबाड़ी में भोग लगाकर बाद में गुरु-परम्परा और द्वयमंत्र का अनुसंधान करती हुई, प्रथम शुद्ध जल से चरण पादुकाओं का प्रक्षालन कर फिर गन्ध, पुष्प, अक्षतादि से पूजन कर विधिपूर्वक हाथ जोड़कर आचार्य के श्रीविग्रह का ध्यान करते हुए उन्होंने नैवेद्यार्पण किया। तदनंतर समस्त श्रीवैष्णवों को साष्टांग प्रणाम करके उनके चरणारविन्दों को धोया और पुनः विनीत वचनों में बोली- ''आप लोग भोजन कीजिये।''

शिष्यों के मुख से उपर्युक्त वृत्तान्त सुनकर यतिराज ने उस साध्वी श्रीवैष्णवी से कहा कि- ''तुम उन चरण-पादुकाओं को यहाँ लाओ।'' जब वह चरण-पादुकायें यतिराज के सामने आयी तो आपने देखा कि पादुकायें भक्तिपूर्वक गन्ध और पुष्पादि से सुपूजित हैं। यह देखकर यतिराज बड़े प्रसन्न हुये और बोले कि- श्रीरंगधाम में यतिराज रामानुजाचार्य ने जो मंत्र तुम्हें दिया था, उस मंत्र को यदि एकान्त में हम से न कहोगी तो तुम्हारे यहाँ श्रीवैष्णव लोग भोजन नहीं करेंगे। तब उस साध्वी ने श्रीवैष्णवों के आराधन की इच्छा से वह मंत्र यतिराज के कान के समीप मुँह ले जाकर सुनाया। तब यतिराज बोले- ''इस मंत्र के प्रदाता रामानुजाचार्य इस समुदाय में उपस्थित हैं या नहीं?'' इन वचनों को सुनकर वह साध्वी सभी वैष्णवों के समीप आई और अंत में यतिराज के पास आकर उनके चरणकमलों की तरफ देखती हुई समस्त श्रीवैष्णवों से बोली- ''यह दोनों चरण गुरुदेव के चरणारविन्दों की तरह सुन्दर और वैसे ही प्रकाशमान हैं। परन्तु इस महानुभाव के हाथ में त्रिदण्ड और शरीर काषाय वस्त्र न होने के कारण यही मेरे गुरुदेव यतिराज श्री रामानुजाचार्य हैं ऐसा निश्चित रूप से मैं नहीं कह सकती हूँ। इतना सुनते ही यतिराज उस दृढ़व्रती आचार्य कैंकर्यनिष्ठा वाली चेलांचलाम्बा से बोले कि- ''मैं ही रामानुजाचार्य हूँ, एवं श्रीरंगम् से शिष्य समुदाय के साथ यहाँ आया हूँ। किसी कारणवश मैंने श्वेत वस्त्र धारण किये हैं।'' बस इतना सुनते ही उस साध्वी ने उनके चरणों में गिरकर अत्यन्त सन्तोष किया और फिर रोने लग गयी। अपने आचार्य को अनायास ही इस प्रकार

अपने घर पर आये हुये देखकर वह सब कुछ भूल गयी। तब यतिराज ने प्रेमपूर्वक उसके आँसुओं को पोंछकर श्रीवैष्णवों से कहा-जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने सात्त्विक पवित्र विदुरजी के अन्न को ग्रहण किया था। वैसे ही आप लोग अब इस सतीसाध्वी के घर का भोजन करें। क्योंकि भक्ति और वस्तु की पवित्रता सद्गुणों से अत्यंत पवित्र होने के कारण श्रीवैष्णवों के सेवन करने के योग्य होती है। इसके द्वारा निर्मित पवित्र भोजन में किसी भी प्रकार का दोष नहीं है। यतिराज की आज्ञा से सब लोगों ने प्रेमपूर्वक इस अन्न को पाकर सुखपूर्वक शयन किया। इन श्रीवैष्णवों के उच्छिष्ट पत्तल में बचे हुये अवशेष अन्न को अपने पति की ज्ञानवृद्धि के लिये उस साध्वी ने लाकर उनकी भक्तिपूर्वक भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य आदि विविध पदार्थों के साथ भोजन कराया और स्वयं भोजन किये बिना ही भूतल पर सो गयी। तब उसके पति ने निराहार होकर पृथ्वी पर शयन का कारण पूछा, तो वह बोली कि- मेरे गुरुदेव यतिराज रामानुजाचार्य अपने शिष्यों के साथ हमारे घर पर पधारे हैं। समस्त शिष्यों ने तो भोजन कर लिया है, लेकिन मेरे द्वारा बारम्बार प्रार्थना करने पर उन्होंने यह कारण बतलाया कि तुम्हारा पति श्रीवैष्णव नहीं है और अवैष्णव के यहाँ पर हम भोजन नहीं करते हैं, और यहकर वह भूखे ही सो गये हैं। जब गुरुदेव ने ही भोजन नहीं किया, तो फिर मैं ही भोजन कैसे कर सकती हूँ? पत्नी के कथन पर विद्वान ब्राह्मण ने विचार करके मन में श्रीवैष्णव बनने का निश्चय करते हुए कहा कि मात्र एक छोटे से कारण के लिये ही निराहार रहना उचित नहीं है। कल प्रातःकाल मैं अवश्य ही यतिराज की शरणागति ग्रहण करुँगा। इस प्रकार बहुत बार शपथपूर्वक कहने पर उस साध्वी ने भोजन ग्रहण किया।

दूसरे दिन प्रातःकाल यह ब्राह्मण यतिराज के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और उसी की पत्नी साध्वी चेलांचलाम्बा ने यतिराज से अपने पति को श्रीवैष्णव बनाने के लिये प्रार्थना की। जिसको स्वीकार करके आपने उस ब्राह्मण को पंचसंस्कार से दीक्षित करके ''श्रीरंगदास'' यह सेवा-भाव वाला नाम देकर भगवत् शरणागत किया।

श्रीरंगदास ने वस्त्रों एवं आभूषणों द्वारा यतिराज के शिष्यादि समस्त श्रीवैष्णव ब्राह्मणों का सम्मान किया। इसके बाद यतिराज ने वहाँ पर चार दिनों तक निवास करके, फिर काषाय वस्त्र और कमण्डलु मँगवाया एवं अपने आराध्यदेव श्री वरदराज भगवान को समर्पित करके पुनः विधिपूर्वक उनको ग्रहण किया। श्रीरंगदास दम्पत्ति के द्वारा प्रेमपूर्वक पूजित यतिराज ने उस समस्त गाँव को अपनी कृपादृष्टि से अपने चरणों का आश्रित बनाया। फिर श्रमपरिहार के लिये और श्रीरंगनाथ भगवान के वियोगजन्य दुःख की स्मृति के लिये कुछ दिन यहाँ पर निवास किया।

।। श्री प्रपन्नामृत का 45वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

जनवरी 2024

०१. नूतन अंग्रेजी वर्ष
०७-१३. श्री आंडाल नीराट्टोत्सव
१० जनवरी से फरवरी ०२ तक
तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का सन्निधान में अध्ययनोत्सव
१४. भोगी
१५. मकर संक्रांति
१६. कनुमा, श्री गोदादेवी का परिणयोत्सव
२५. श्रीरामकृष्ण तीर्थ मुक्कोटी
२६. भारत गणतंत्र दिवस

रामो विग्रहवान धर्मः

- प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

'राम' शब्द मात्र भारत में ही नहीं बल्कि विश्वभर में गूंजता सुनाई पडता है। राम के साथ भारतीयों का ऐसा संबंध है जो भारतीयों से कोई अलग नहीं कर सकता है। राम शब्द भारत के कण कण में और भारतवासियों के नस नस में समा गया है। भारतीय जीवन और भारतीय संस्कृति के लिए राम एक मूलाधार है। राम भारतीय संस्कृति की एक बुनियादी है। राम भारतीय धर्म की सर्वोत्तम मूर्तिमान रूप है। राम धर्म का पोषक, संरक्षक और पालक है। राम का धर्म सिर्फ एक राजा का ही नहीं बल्कि एक पुत्र का, एक पिता का, आखिर एक मानव का है। मर्यादा शब्द की कोई परिभाषा देनी है तो वह राम के साथ ही दी जा सकती है। सारी मर्यादाओं का पालन करते हुए राम ने सर्वोत्तम मानव धर्म की प्राण प्रतिष्ठा अपने जीवन में की है। राम का मर्यादा पुरुषोत्तम का रूप ही भारतीयों को सब से अधिक प्रिय है। राम का जीवन आदर्श जीवन है। सर्वोत्तम मानव जीवन है। साक्षात श्री महाविष्णु ने मनुष्य की योनी में पैदा होकर पूरे ब्रह्मांड के लिए एक

आदर्श धर्म की प्राण प्रतिष्ठा की है। राजा के स्तर पर, परिवार के स्तर पर और मनुष्य मात्र के स्तर पर राम का कोई विकल्प किसी भी पुराण में, इतिहास में, आध्यात्मिक क्षेत्र में देखा नहीं जा सकता है।

कौसल्या और दशरथ के दंपतियों को जेष्ठ संतान के रूप में राम अयोध्या में पैदा हुए है। यह आज के उत्तर प्रदेश राज्य में अयोध्या क्षेत्र के रूप में लोक प्रचलित है। प्राचीन कोसल देश की राजधानी अयोध्या थी। अवध प्रदेश अयोध्या क्षेत्र राम की जन्म भूमि के रूप में भी प्रचलित हुई। मध्य युग में भी अयोध्या क्षेत्र प्रचलित था। उन दिनों में ही अयोध्या में राम के लिए मंदिर, रामलला मंदिर निर्माण हुआ है। कालांतर में विदेशी आक्रमणों से बच कर राम मंदिर आज भी विराज मान है। राम जन्म भूमि अयोध्या भारत वासियों के लिए तथा हिंदु धर्मावलंबियों के लिए पवित्र, पुण्य तीर्थ ही बन गया है। हाल ही में भारत सरकार ने पुनः अत्यंत भव्य मंदिर बनाने की नींव रखी है। राम की जन्म भूमि अयोध्या में रामलला का मंदिर यथाशीघ्र ही अपने भक्तों के लिए नेत्र पर्व करने के रूप में तैयार होकर खडा हो गया है। इस भव्य मंदिर में बसनेवाले राम सभी भारतीयों के हृदय में बसे हुए हैं।

राम एक शब्द नहीं बल्कि एक संस्कृति है। सभी रूपों में मानवोचित आदर्श संस्कृति का प्रतीक है। एक राजा के, मनुष्य के आदर्श रूप श्रीराम में हम देखते हैं। वैसे ही वे आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श पिता, आदर्श स्वामी, आदर्श शिष्य, आदर्श सखा आदि समस्त मानवीय रिश्तों के घनीभूत आदर्श मूर्ति है। इन सभी रिश्तों के आदर्श रूप की कामना करनेवाले भारतवासी सहज ही श्रीराम को अपने आराध्य मानते हैं। आध्यात्मिक स्तर पर सोचने से पता चलता है कि रावणादि राक्षसों का संहार करके धर्म की रक्षा और अनुपालन करने के लिए श्रीराम अवतरित हुए हैं। यह अवतारी रहस्य भी है कि श्री महाविष्णु मानव के रूप में पैदा हुए। रावण को प्राप्त वरदान इस के लिए एक कारण है तो दूसरी ओर अवतार का दूसरा लक्ष्य आदर्श मानवीय रिश्तों की स्थापना के लिए श्रीराम अवतरित हुए हैं। शायद ही इस दूसरे कारण से ही भारतवासी श्रीराम पर ही अधिक विश्वास और आसक्ति रखते हैं। तुलसीदास के इस विचार को भारतवासी अपने मस्तक पर रखते हैं। तुलसीदास ने कहा है-

नहिं कलि करम न भगति बिबेकु।
राम नाम अवलंबन एकु।।
कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना।
एक अधार राम गुन गाना।।
कलियुग केवल हरि गुन गाहा।
गावत नर पावहिं भव थाहा।।

कलियुग में मनुष्य की कई सीमाएँ हो गयी हैं। आज के मनुष्य के चारों तरफ पापों का बोलबाला है। झूठ, छल, कपट का साम्राज्य बना हुआ है। देश में प्रशासकों समेत सभी भ्रष्टाचार के दल दल में फंसे हुए हैं। ऐसे महान, घोर भयंकर समय में योग, यज्ञ, तप, ज्ञान-दान आदि शिक्षा के साधन बनने तो बडे ही कठिन और असंभव सा हो गया है। ऐसे आध्यात्मिक विरोधी परिवेश में कोई मनुष्य की रक्षा कर सकता है, उसे सुपथ पर ले जा सकता है तो सिर्फ श्रीराम नाम ही है। तुलसीदास ने इसी ओर संकेत किया है। अपने समय के साथ घनिष्ट संबंध रखनेवाले आध्यात्मिक चेतना के स्तर पर सभी भारतवासियों ने तुलसीदास के इस संदेश को बहुत पहले से ही अपने जीवन में अभ्यास करना शुरू किया है। इसलिए श्रीराम उन के आदर्श देव ही नहीं बल्कि आदर्श मानवमूर्ति बने हुए हैं। 'श्रीराम' शब्द के उच्चारण में ही कलिमैल को दूर करने की शक्ति है। राम कथा या रामायण ही मौन साक्षी है कि उस में राम

नाम से ही जीव-जंतु, कीट, पतंग, जड-चेतन सभी भव सागर से तर गए। मनुष्य भी श्रीराम के नाम मात्र से इस भव सागर से तर सकता है। भव सागर से पार करा सकने वाले श्रीराम नाम अत्यंत प्रचलित हो गया है। कलियुग में गति की प्राप्ति सिर्फ श्रीराम नाम से ही संभव है। मानव जन्म की मुक्ति के इस मूल मंत्र को भारतवासी अच्छी तरह जानते हैं। इसलिए वे उठते-बैठते, खाते-सोते सभी समयों में श्रीराम को ही अपना आराध्य मानते हैं। इसलिए उन्होंने अपने हृदय सिंहासन पर श्रीराम को बसाया है।

राम की चरण धूलि से आंध्र भी पुनीत हुआ है। आंध्र राम की लीलाभूमि भी है। बिना पादुकाओं से राम ने आंध्र में संचार किया है। सीता राम के विहार, विनोद-हास्य, क्रिडाओं, वेदनाओं की धरती रही है आंध्र। इस धरती के कण कण में, वायु में, जल में, आकाश में, वृक्ष-लताओं में राम तत्व फैला है। इसलिए भारत के अन्य भूभागों से आंध्र में राम तत्व की व्याप्ति अत्यधिक हुई है। स्त्री-पुरुषों के नामों में राम तत्व है, सीतम्मा, जानकम्मा, मैथिली, वैदेही, जैसे नाम... रामन्ना, रामय्या, रामसुब्बम्मा, राम चंद्रय्या, रामुलम्मा जैसे नाम इसी के परिणाम हैं। आंध्र के लोग नये कार्यारंभ में 'श्रीराम' लिखकर ही आरंभ करते हैं। तेलुगु भाषा में रामनामांकित अनेक कहावतें यत्रतत्र सर्वत्र मिल जाती हैं। जैसे कोई आरोप लगने पर यहाँ के लोग 'राम राम मैं ने नहीं किया' बोलते हैं। 'अय्यो राम नेनु नेनट्ल अनलेदु'(हाय मैं ने ऐसा नहीं कहा), चिंता प्रकट करने के लिए 'हा, राम एंत पनि अइंदय्या',(हाय राम कितना बुरा हो गया), थकने पर 'हम्मा रामा, अइ पोइंदिरा पनि' (हाय राम काम पूरा होगया), यहा तक कि तेलंगाना प्रदेश में 'राम नाम सत्य है' कह कर अंतिम यात्रा पर ले जाते हैं। ये सारे तत्व यही स्पष्ट करते हैं श्रीराम आंध्र प्रदेशवासियों के लिए सांस बने हुए हैं।

आंध्र के कण कण में राम तत्व को पाकर एक तेलुगु लेखक 'पानुगंटि लक्ष्मी नरसिंहराव' ने कहा है--

वीधि पुराणंबवु वेदिकपै नीवु
पारायणपु बीट पैनि नीवु
दृश्य प्रबंधपु देरल नंदुन नीवु
गोल्ल सुद्धुल रेकु डोल्ललंदुन नीवु
यक्षगानपु जिंदुलंदुन नीवु
चंडालुबुजमु पै मोंडि तुंबुर नीवु
तोलु बोम्मल संत गोल नीवु
पडक गदुल गोडल नीवु भक्त हृदय
रसनलनु नीवु, मायावरतनु नीवु
सृष्टि नीयममो? नीवु सृष्टि मयमो
येट्लइन नेमि राम रक्षिंपुमय्या!

तेलुगु लेखक के ये विचार शतप्रतिशत सही है।

श्रीराम नाम की महिमा -

आखिर श्रीराम नाम में ऐसी महिमा क्यों है? वह महिमा क्या है? श्रीराम नाम कल्पवृक्ष के समान है। श्रीराम नाम सभी प्रकार के साधक-भक्तों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों को प्रदान करनेवाला है। तुलसीदास ने घंटे की चोट पर इस का समर्थन किया है। उन्होंने लिखा है-

राम नाम कल्पतरु देत फल चारि रे।
कहत पुरान, बेद, पंडित, मुरारि रे।।
राम-नाम प्रेम-परमारथ को सार रे।
राम नाम तुलसी को जीवन आधार रे।।

(विनय पत्रिका-67-4-5)

तुलसीदास ने 'राम' शब्द का विशेष विश्लेषण भी प्रस्तुत किया है। राम शब्द के तीनों वर्णों ('र','अ' तथा 'म') को कृसान (अग्नि), भानु(सूर्य) और हिमकर(चंद्रमा) की वे उपमा देते हैं। इन तीनों गुणों को श्रीराम नाम की महत्ता के साथ जोडकर तुलसीदास ने कहा है--

बंदउ नाम राम रघुबर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को।।

(रा.च.मा.1-19-1)

अर्थात जैसे अग्नि का काम पदार्थों को भस्म करना है, वैसे ही 'श्रीराम नाम' रूपी पावक (अग्नि) भी जीव के समस्त पापरूपी तूल (रूई) को जलाकर भस्म कर देता है।

'श्रीराम नाम' ज्ञान, वैराग्य, भक्ति तीनों का प्रदाता है। रामायण में यह कहा गया है-

विज्ञानस्थो रकारः स्यादकारो ज्ञानरूपकः।

मकारः परमा भक्ति रमु क्रीडोच्यतेततः।।

रकारो हेतुवैराग्यं परमं यच्च कथ्यते।

अकारो ज्ञानहेतुश्च मकारो भक्ति हेतुकम।।

(वाल्मीकी रामायण)

अर्थात 'श्रीराम-नाम' में 'र' कार के उच्चारण से 'विज्ञान-वैराग्य', 'अ' कार के उच्चारण से 'ज्ञान' और 'म' कार के उच्चारण से 'प्रेमा भक्ति' प्राप्त होती है और इस प्रकार 'श्रीराम नाम' संपूर्ण ज्ञान, वैराग्य और भक्तितीनों को प्रदान करने में पूर्णतया समर्थ है।

तुलसीदास ने कहा है--

अनल भानु ससि ब्रह्म हरि हर ओंकार समेत।

ब्रह्म जीव माया मनहिं भिन्न भिन्न सिख देत।।

(मानस)

अर्थात 'श्रीराम-नाम' अग्नि, सूर्य, चंद्रमा, त्रिदेव (ब्रह्म, विष्णु, महेश), प्रणव, ब्रह्म, जीवन और माया- इन दसों का कारण और तद्रूप है और हमारे मन को इस प्रकार शिक्षा देता है कि 'श्रीराम-नाम' 'अग्नि, सूर्य, चंद्रमा' की तरह जीवों का पालन-पोषण करने में और त्रिदेवों (ब्रह्म, विष्णु, महेश) की तरह उत्पत्ति-पालन-संहार द्वारा जीवों का कल्याण करने में समर्थ है। यह 'प्रणव' (ओं) की तरह वेदों को सत्तावन बनाये रखने में और सृष्टि की रक्षा करने में समर्थ है। यह 'निर्गुण ब्रह्म की तरह सृष्टि के समस्त जीवों के साथ रहकर उन के इंद्रिय आदि को सदैव चेतन रखने में समर्थ है 'विद्या माया' तो जीव को भक्ति मुक्ति के मार्ग पर लगाती ही है। इस प्रकार 'श्रीराम-नाममय' इन दसों का हमारे मन पर पूरा पूरा उपकार है।

तुलसीदास ने 'राम' शब्द के साथ एक और भाव को भी जोडकर बताया है-

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भतर बाहरेहुँ जौं चाहसि उजियार।।

यानी श्रीराम नाम में उपस्थित अग्नि, सूर्य और चंद्रमा तथा इनके गुण धामों के संदर्भ में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भाव मिलता है कि 'अग्नि' के प्रकाश का लाभ संध्या और रात्रिकाल में, 'सूर्य' के प्रकाश का लाभ केवल दिन में और 'चंद्रमा' के प्रकाश का लाभ केवल रात्रिकाल में ही प्राप्त होता है। लेकिन 'श्रीराम-नाम' रूपी 'सर्वोत्तम-दिव्य-मणि' के प्रकाश का लाभ तो जीव के भीतरी और बाहरी संसार में हर समय ही सुलभ है।

रामायण में 'राम' शब्द के 'र', कार 'अ' कार, 'म' कार की विशेष व्याख्या की गयी है। जैसे अग्नि शुभाशुभ सभी वस्तुओं को जलाकर भस्म कर देता है और कुछ (स्वर्णादि जैसी) वस्तुओं के मल तथा दोष को जलाकर उन को शुद्ध बना देता है, वैसे ही 'श्रीराम-नाम' में 'र' कार के उच्चारण से शुभाशुभ कर्म नष्ट होते हैं, जिन का फल स्वर्ग-नरक का अभाव है, दूसरे 'र' कार के उच्चारण से मन की विषय वासनाओं का नाश होकर स्वस्वरूपी आत्मा की झलक देखने में सहायता मिलती है। 'श्रीराम नाम में' अकार भानु (सूर्य) बीज है, जो वेद शास्त्रों यानी कि ज्ञान का प्रकाशक है। जैसे सूर्य अंधकार को दूर करता है, वैसे ही अकार के उच्चारण से हृदय में बसे हुए मोह आदि जो अविद्या-तम (अंधकार) है, उन का नाश होकर 'ज्ञान' का प्रकाश होता है। 'श्रीराम-नाम' में, 'म' कार चंद्र बीज है, जो अमृत से परिपूर्ण है। जैसे चंद्रमा त्रिताप को हरता है, शीतलता प्रदान करता है, वैसे ही 'म' कार के उच्चारण से त्रिताप दूर होकर हृदय में श्री भगवान की 'भक्ति' का प्रादुर्भाव होता है और 'भगवदाश्रय शरणागति रूपी शीतलता' प्राप्त होती है।

राम शब्द चिदानंदमय भी माना जाता है। यानी 'र' कार 'चित' का, 'अ' कार 'सत' का और 'म' कार 'आनंद' का वाचक है, इस प्रकार यह 'श्रीराम नाम' सच्चिदानंदमय है। इस के अतिरिक्त राम शब्द को र-अ-अ-म-अ पंच वर्णों में विभक्त करके पंच ब्रह्म और पंच तत्वों के साथ संबंध भी जोडा जाता है।

स्पष्ट है कि श्रीराम नाम की इसी महिमा से भारतवासी भलीभांति परिचित हैं। इसलिए इस महिमा को जान राम नाम का स्मरण करके अपने जीवन को धन्य बनाते हैं। तेलुगु में प्रचलित 'राम नाममु राम नाममु रम्य मैनदि राम नाममु' कीर्तन-भजन इसी का साक्ष्य प्रमाण प्रस्तुत करता है।

क्रमशः

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चयनित पद्य)

विद्वत्पद्धति

ऊरु विडुव कुंडु नुत्तम शिवयोगि
पोरि चूचु मदिनि बूर्ण सुखमु
दारि लोनि नक्क दल पेट्ट बोवुने
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।25।।

उत्तम शिवयोगी (साधक) अपना गाँव छोड़ कर (ब्रह्म के अन्वेषण में) बाहर नहीं जाता है। अपने ही घर में बैठ कर चंचल इंद्रियों के साथ घनघोर युद्ध करता रहता है। अंत को उन्हें वश में लाकर पूर्ण सुख अनुभव करता है। किंतु इधर-उधर भटकने वाला सियार (चंचल चित्तवाला) तत्त्व की बातें सोचने की भी योग्यता कहीं प्राप्त कर सकेगा?

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

2. नडुनाट्टु दिव्य क्षेत्र

41) तिरुवहीन्द्रपुरम् - (अयिन्दै)

यह क्षेत्र चेन्नै-तिरुच्चि मेइन लाइन में - तिरुपादिरिपुलियूर रेल्वे स्टेशन (चेन्नै) से 5 कि.मी. की दूरी पर है। बस की सुविधा है।

मूलमूर्ति - दैव्य नायकन देवनाथन - पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

उत्सवर - देवनाथन, मूवराहिय ओरुवन्, दिविषननाथ, विबुधनाथ, दाससत्यन, अडियवरक्कु मेय्यन्।

तायार (माताजी) - हेमांबुजवल्लि तायार, (वैकुण्ठ नायकी)।

तीर्थ - गरुडनदी, चन्द्रतीर्थ, शेषतीर्थ (भू तीर्थ) (मंदिर के अंदर - मडप्पळि के सामने)।

विमान - चंद्र विमान, शुद्धसत्व विमान।

प्रत्यक्ष - चंद्र, गरुड (अलग सन्निधि में लक्ष्मण सीता समेत रामचंद्रन दर्शन देते हैं।)

विशेष - मंदिर के गोपुर द्वार के सामने जहाँ हयग्रीव मंदिर है, वहाँ औषधिगिरि नामक एक छोटी पहाडी

है। रामानुज के बाद के वैष्णव आचार्य श्री स्वामी देशिकन ने अपनी 20वीं उम्र में यहाँ तपस्या कर हयग्रीव एवं गरुड का अनुग्रह प्राप्त किया। मंदिर - इस मंदिर का वेदान्त देशिक के साथ निकट संबंध है।

मंदिर में देशिकन स्वामी सन्निधि बहुत प्रसिद्ध है। आदिशेष ने इस क्षेत्र का निर्माण किया इसलिए इसका नाम तिरु अहीन्द्रपुरम पडा। यहाँ गरुड ने (गरुड नदी) विरजा तीर्थ - (मंदिर के पास गरुड नदी बहती है) और आदिशेष ने शेष तीर्थ लाकर समर्पित किया। प्रसाद (नैवेद्य) बनाने शेष तीर्थ और तिरुमंजन (अभिषेक) के लिए गरुड तीर्थ का उपयोग किया जाता है।

स्वामी देशिकन यहाँ लगभग 40 वर्ष रहते थे। उनके वास (शेष तीर्थ) की श्रीमाली और उनके हाथ से बना कुआँ आज भी दर्शन कर सकते हैं। यहाँ वैखानस पद्धति के अनुसार आराधना होती है। माडावीथि में मणवाल महामुनि सन्निधि है।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 10 दिव्य पद। यहाँ वर्ष भर में कई उत्सव मनाए जाते हैं। देशिक जन्म उत्सव बडी श्रद्धा से मनाया जाता है।

42) तिरुक्कोवलूर (गोपपुरम्)

विल्लुपुरम - काट्पाडी रेल मार्ग में तिरुक्कोवलूर में एक रेल स्टेशन है जो चेन्नै से (विल्लुपुरम हो कर) 197 कि.मी. की दूरी पर है। सभी स्थानों से बस की सुविधा है।

मूलमूर्ति - तिरुविक्रम भगवान। अपने दाएँ दिव्य चरणों को, इस लोक को नापने दाएँ पांव ऊपर उठाने की मुद्रा में हैं। पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

उत्सवर - आयनार, कोवलन - (गोपालन) देहलीशरन।

तायार (माताजी) - पुत्त कोविल नाच्चियार पुष्पवल्लि (उत्सवर)।

तीर्थ - पेण्णैयारु, कृष्ण तीर्थ, चक्रतीर्थ।

विमान - श्रीकर विमान।

प्रत्यक्ष - बलि चक्रवर्ति, मृगण्डु, ब्रह्म, इन्द्र कुक्षि, शौनकर, काश्यप मुनि, गालवर, कुशध्वज, तीन मुदलाल्वारकल (पोय्है आल्वार, भूतत्ताल्वार, पेयाल्वार)।

विशेष - वामन-तिरुविक्रम अवतार स्थल। स्वामी देशिकन भक्तोपमर्देन से इनका गुण गाते हैं। वर्षा के एक दिन इसी क्षेत्र में रात को एक घर की देहली में तीन भक्त मिले। उस तंग स्थान में भक्तोपमर्दन भगवान और माताजी के दर्शन कर खडे-खडे तीन अन्तादियों को गाकर भगवान को समर्पित किया। तिरुविक्रम भगवान भी खडे-खडे सुनते रहे। (4000 दिव्य प्रबंध में ये दिव्य पद संग्रहीत हैं।) अन्तादी एक छंद का नाम। यह ऐतीह्य है कि 4000 दिव्य प्रबंध यहीं पर आरंभ हुआ।

मूलमूर्ति के दाएँ हाथ में शंख, बाएँ हाथ में चक्र शोभित हैं। भगवान के दाएँ पाद आसमान की ओर है। लोक नापने की मुद्रा में विराजमान हैं।

यह ऐतीह्य है कि यहीं पर महाबलि के गर्व को शमन कर अनुग्रह किया। स्वामी देशिकन की 'देहलीश स्तुति' बहुत प्रसिद्ध है। यह स्थल पंचकृष्णारण्य क्षेत्रों में से एक है। दूसरे पंच कृष्णारण्य क्षेत्र तिरुकण्णङ्कुडि, तिरुक्कण्णमंगै कपित्तलम्, तिरुक्कण्णन-तिरुक्कण्णमंगै। श्रीकृष्ण का नित्य सान्निध्य स्थल है। यहाँ से निकट अरकण्ड़नल्लूर में श्रीरंगनाथ के दर्शन कर सकते हैं।

मंगलाशासन - 3 आल्वार, कुल 21 दिव्य पद।

क्रमशः

23 दिनों का अध्ययनोत्सव

लघु श्री अध्ययन का प्रारंभ मार्गशीर्ष महीने में शुक्ल पक्ष एकादशी-ग्यारहवें दिन तक संपन्न होंगे। प्रथम दिन रात्रि के समय तीन तिरुवंदादी, नान्मुगन तिरुवंदादी, तिरुविरुत्तम् आदि के पाशुरम् का पारायण करेंगे। दूसरे दिन सुबह इयर्पा आयिरम पारायण करेंगे, रात में तिरुप्पल्लांडु प्रारंभ करेंगे। तीसरे दिन सुबह पेरियाल्वार तिरुमोळि दो दस गीत, रात में सेन्नियोंगु पारायण करेंगे। चौथे दिन सुबह पेरियाल्वार तिरुमोळिक्कुरै, रात में विण्णील मेलाप्पु पारायण करेंगे। पाँचवें दिन सुबह तिरुप्पावै, नाच्चियार तिरुमोळि, रात में ऊनेरु सेल्वत्तु पारायण करेंगे। छटे दिन सुबह पेरुमाळ तिरुमोळि से प्रारंभ करके कण्णिनुण् शिरुत्ताम्बु तक पूरे प्रथम हजार पद्य पारायण करेंगे। रात में तिरुमोळि प्रारंभ (याने वाडिनेन् वाडियुम् ताये तन्दैये पारायण) पारायण करेंगे। सातवें दिन सुबह तिरुमोळि के दो दस गीत, रात में वाडा मरुदिडै पोगि पारायण करेंगे। आठवें दिन सुबह तिरुमोळि तीसरा दस गीत और चौथा दस गीत, रात में पण्डै नान्मरै पारायण करेंगे। नौवें दिन सुबह पाँच, छे, सात और दसवाँ गीत, रात में तेळियीर देवर्क्कुम् के पाशुरम पारायण करेंगे। दसवें दिन सुबह आठ और नौ के दस गीत, रात में कादिल कडिप्पिट्टु पाशुरम पारायण करेंगे। ग्यारहवें दिन सुबह दसवाँ दस गीत और ग्यारहवाँ दस गीत, रात में तिरुक्कुरुन्ताण्डगम, तिरुनेडुन्ताण्डगम्, तिरुमोळि चाट्टुगै पारायण करेंगे। इस प्रकार ग्यारह दिनों तक रात में अरैयर कोइल तिरुमोळि को राग के साथ पारायण करेंगे। रात में हर रोज तिरुवाय्मोळि से एक दस गीत पारायण करेंगे। अगले दिन सुबह शेष पारायण करेंगे। शुक्ल पक्ष एकादशी प्रारंभ से बड़ा अध्ययनोत्सव प्रारंभ होता है। चार वेदों और इतिहासों को पारायण करेंगे। ग्यारहवें दिन रात में कण्णिनुण् शिरुत्ताम्बु, बारहवें दिन रात में रामानुज नूट्रंदादि आदि पारायण करेंगे। अगले दिन ज्ञानपिरान तिरुवायमोळि को सुनेंगे। तिरुमल में अध्ययनोत्सव के समय दूसरे दिन से लेकर तेईसवें दिन तक शाम के समय में मलैकुनिय निन्ड्रपेरुमाळ् के शोभायात्रा के लिए निकलेंगे।

दि. 15-10-2023 से दि. 23-10-2023 तक तिरुमल में नवरात्रि ब्रह्मोत्सव अत्यंत धूम-धाम से संपन्न किया गया। इस संदर्भ में ति.ति.देवस्थान के श्रीश्रीश्री पेद्द(बडा) जीयर स्वामीजी, श्रीश्रीश्री चिन्न(छोटे) जीयर स्वामीजी, ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष, ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे. के दोनों संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारीगण, ति.ति.दे. के मुख्य सुरक्षा व चौकसी अधिकारी, ति.ति.दे. न्यास-मंडली के सदस्य गण और ति.ति.दे. के अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।

इस नवरात्रि ब्रह्मोत्सव के अवसर पर भारत के कोने कोने प्रांतों से विविध कलाबृंद भाग लेकर चार माडावीथियों में अपने नृत्यों को प्रदर्शन किया। इस संदर्भ में सभी भक्तगण भाग लेकर भगवान जी का आशीष को प्राप्त कर लिया।

आं.प्र. के राज्यपाल माननीय श्री एस.अब्दुल नजीर जी ने दि. 22.10.2023 को तिरुमल, श्री बालाजी का दर्शन किया। इस संदर्भ में स्वामीजी का तीर्थ प्रसाद व चित्रपठ को न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.करुणाकर रेड्डी जी से स्वीकारते हुए दृश्य।

दि. 18-10-2023 को तिरुमल में स्थित श्रीवारि सेवासदन-2 में श्री बालाजी का भक्तों की सेवा करने के लिए आयोजित की गयी योजना 'श्रीवारिसेवा' के द्वारा निःस्वार्थ सेवा करने वाली श्रीवारि सेवकों के बारे में भाषण देते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.करुणाकर रेड्डी जी। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. के अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया।

विश्व अंतरिक्ष सप्ताह के अवसर पर तिरुपति में स्थित श्री गोविंदराज स्वामी उच्च पाठशाला में अंतरिक्ष प्रदर्शनी को दि. 07-10-2023 को ति.ति.दे. के जे.ई.ओ. श्रीमती सदा भार्गवी, आई.ए.एस., जी ने प्रारंभोत्सव किया था। तदनंतर अतंरिक्ष विज्ञान के बारे में भाषण दिया था। इस संदर्भ में ति.ति.दे. के विद्याशाखा अधिकारी, अंतरिक्ष विज्ञान केंद्र संबंधित अधिकारीगण, ति.ति.दे. पाठशालाओं के अध्यापक और विध्यार्थीगण ने भाग लिया।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

शोर्विन्नि युन्तन् तुणैयडिक्कीळ्, तोण्डु पट्टवर्पाल्
शार्विन्नि निन्नवेनकु, अरंगन् शेय्य ताळिणैहळ्
पेर्विन्नि यिन्नु पेरुत्तु मिरामानुज इनियुन
शीरोन्नि य करुणैक्कु, इल्लैमारु तेरिवुरिले ॥८१॥

भो भगवान् रामानुज! भवत्पादारविन्दद्वन्द्वे अनारतमातन्यमान शेषवृत्तिशालिनां सतां विषये विमुखतया स्थितस्यापि ममाद्य श्रीरंगनाथ भगवत्पादारविन्दद्वंद्वमवतंसपदे प्रतिष्ठापितवानसि; एतद्विमर्शे भवदीयायाः परमकृपाया असदृशत्वमेव ह्यवसेयं भवति।

आपके उभय पादारविंदों की नित्यसेवा करनेवाले महात्माओं के विषय में भक्तिहीन रह गये मेरे सिर पर आज श्री रंगनाथ भगवान के उभयपादारविंदों को सुदृढ स्थापित करनेवाले हे श्री रामानुज स्वामिन्! इस बात का विवेचन करने पर यही सिद्ध होता है कि आपकी कृपा सर्वथा उपमान रहित है।

श्री रामानुज स्वामीजी की कृपा सर्वथा उपमान रहित हैं।

क्रमशः

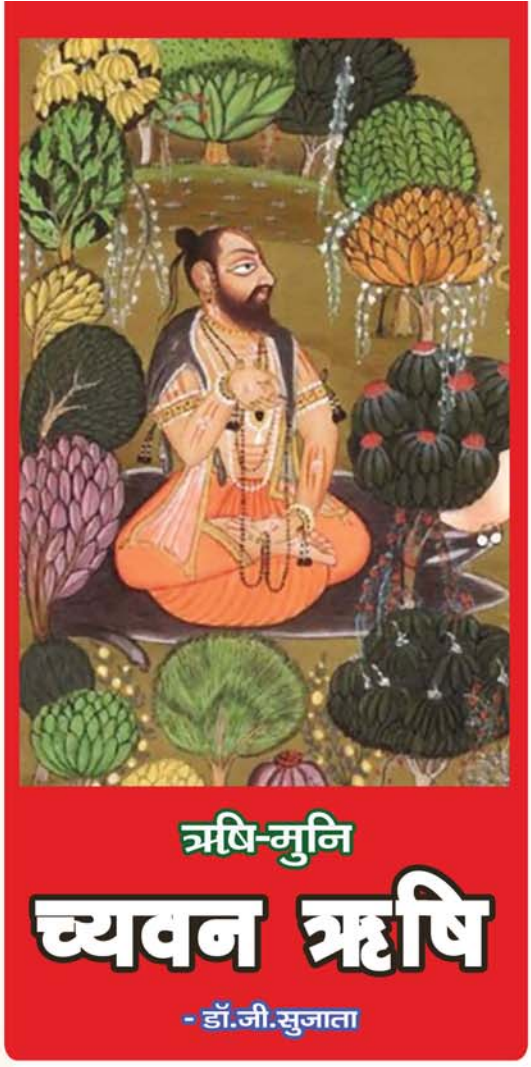

ऋषि च्यवन को महान् ऋषियों की श्रेणी में रखा जाता है। च्यवन ऋषि प्राचीन भारत के महान आयुर्वेदाचार्य तथा ज्योतिषाचार्य कहे जाते हैं। इनके विचारों एवं सिद्धांतों द्वारा ज्योतिष में अनेक महत्वपूर्ण बातों का आगमन हुआ। इस कारण यह ज्योतिष गुरु के रूप में भी प्रसिद्ध हुए थे। इनके द्वारा रचित ग्रंथों से ज्योतिष तथा जीवन के सही मार्गदर्शन का बोध हुआ। हिन्दू धर्म ग्रंथों के अनुसार उन्होंने अपनी कठोर तपस्या से असीम तेज अर्जित कर लिया था। इन्द्र के वज्र के प्रहार को भी खत्म करने के शक्ति उनमें निहित थी।

जन्म से ही च्यवन विद्वान और ज्ञानी थे। इनके पुत्र का नाम और्व और इनका विवाह आरुषी से हुआ था जिससे इन्हें और्व नामक पुत्र प्राप्त हुआ। इनकी अन्य विवाह राजा शर्याति की पुत्री सुकन्या से भी हुआ था।

जन्म कथा

पुराणों में महर्षि च्यवन का जन्म वृत्तांत कौतूहलों से भरा है। महर्षि भृगु और पुलोमा के पुत्र थे महर्षि च्यवन। इस महान ऋषि की जीवनी से जुड़ी कहानी अत्यंत ही रोचक है। इनकी माँ पौलमी दानवराज पुलोमा की पुत्री थी। महाभारत शांतिपर्व के एक अध्याय में वर्णित है की पौलमी की सगाई पुलोम वंश के ही दंस के साथ निर्धारित थी। लेकिन दानवराज पुलोमा ने अपनी पुत्री पौलमी की शादी महर्षि भृगु के साथ कर दिया। इस बात से दंस बहुत क्रोधित हुआ।

एक समय की बात है महर्षि भृगु आश्रम में नहीं थे। गर्भवती पौलमी अकेली आश्रम में मौजूद थी। दंस ने मौका पाकर पौलमी का हरण की योजना बनाई। वह पौलमी को हरण कर अपने साथ जबरदस्ती ले जाने लगा। चूंकि पौलमी उस वक्त गर्भवती थी, विरोध और विलाप के कारण रास्ते में ही पौलमी का गर्भपात हो गया। पौलमी का नवजात शिशु जमीन पर गिर गया। कहा जाता है की भूमि पर गिरने के कारण ही शिशु का नाम च्यवन (गिरा हुआ) रखा गया। शिशु के जन्म के समय जो तेज प्रकट हुआ, उसके आंच में राक्षस पुलोमा जलकर भस्म हो गया। ऋषि-पत्नी पुलोमा विलाप करते हुए आश्रम को लौट आई। पुलोमा के नेत्रों से अविरल जो अश्रुधारा बह निकली, वह नदी के रूप में प्रकट हुई। उस नदी का नाम पड़ा वधूसर। आश्रम लौटने पर भृगु को पुलोमा के अपहरण का समाचार मिला। उस समय अग्निदेव पुलोमा की रक्षा करने के उद्देश्य से आश्रम का पहरा दे रहे थे। अग्निदेव की असावधानी पर रुष्ट हो भृगु ने उनको सर्व भक्षक बनने का शाप दे डाला।

च्यवन ऋषि का सुकन्या से विवाह

बालक च्यवन बचपन से ही भक्ति भाव रखता था। उसने सोचा कि तपस्या करके कोई महान कार्य करना है। इस विचार से उसने निश्चल

भाव से अन्न-जल भी त्यागकर तप करना आरंभ किया। कालांतर में उसके चारों तरफ वल्मीक यानी बाम्बियाँ निकल आईं। बाम्बियों के चतुर्दिक पौधे उग आए। लताओं से बाम्बियाँ ढक गईं। इन बाम्बियों के कोटरों में पक्षियों ने घोंसले बनाए।

कहते हैं की प्राचीन काल में भारतवर्ष में शर्याति नामक एक राजा थे। अपने न्याय प्रियता और कुशल प्रशासन के कारण जनता के बीच वे अत्यंत ही लोकप्रिय थे। राज्य में चारों तरफ शांति और खुशहाली व्याप्त थी। एक दिन की बात है राजा सपरिवार वन विहार के लिए अपने राज्य के ही जंगल में निकले। भ्रमण के दौरान जब सभी एक स्थान पर विश्राम कर रहे थे। राजकुमारी सुकन्या अपनी सखियों के सात वन-विहार करते उस बाम्बी के समीप पहुँची। उसने देखा कि बाम्बी के चारों तरफ एक विचित्र प्रकाश फैला हुआ है। उसका कौतूहल बढ़ गया। वह प्रकाश बाम्बी के भीतर से कैसे फूट रहा था इस रहस्य का पता लगाने के विचार से सुकन्या एक लकड़ी तोड़कर बाम्बी को खोदने लगी।

बाम्बी के भीतर से उसे ये शद्ध सुनाई पड़े कि बाम्बी को मत खोदो। यहाँ से चली जाओ। सुकन्या विस्मय में आ गई। उसकी जिज्ञासा दुगुनी हो गई, लेकिन अगले ही क्षण उसने देखा कि नक्षत्रों की भांति दो ज्योतियाँ दमक रही हैं। उनका परीक्षण करने के ख्याल से सुकन्या ने उन प्रकाश बिंदुओं पर पतली छड़ी घुसेड़ दी। तत्काल भीतर से रक्त के छीटें छितरा गए। राजकुमारी भयभीत हो अपनी सखियों के साथ वहाँ से भाग गई। आँखों में काँटे गड़ जाने के कारण च्यवन ऋषि अन्धे हो गये।

वास्तव में प्रकाश की बिंदुएँ तपस्या में रत च्यवन की आँखें थीं। च्यवन को अपार पीड़ा हुई। फिर भी वे क्रुद्ध नहीं हुए। निश्चलभाव से समाधिस्थ तपस्या में रहे। परंतु उधर राजा शर्याति के राज्य में नाना प्रकार के उपद्रव प्रारंभ हुए। जनता में त्राहि-त्राहि मच गई। भयंकर व्याधियों का प्रकोप हुआ। मल-मूत्र तक स्तंभित हो गए। मनुष्य, पशु और पक्षी भी व्याधिग्रस्त हुए। राजा का मन व्याकुल हो उठा। इन उत्पातों का कारण राजा की समझ में न आया। अकारण राज्य में हलचल मच गई। राजा ने मंत्री, सलाहकार तथा ज्योतिषों को बुलवाकर इन उत्पातों का कारण जानना चाहा, परंतु कोई भी सही समाधान नहीं दे पाए।

राजकुमारी सुकन्या बड़ी बुद्धिमती थी। उसने मन में संदेह हुआ कि कहीं ये सब उत्पात उसकी करनी का फल हो। उसने राजा को सारा वृत्तांत सुनाकर कहा कि पिताजी मैं समझती हूँ कि इन सारे उपद्रवों का कारण मैं ही हूँ। राजा शर्याति विवेकशील पुरुष थे। उन्होंने तत्काल वल्मीक के पास जाकर बड़ी सावधानी से बाम्बी को तुड़वा दिया। तपस्वी च्यवन के चरणों में प्रणाम करके अपनी पुत्री के इस अकृत्य के लिए राजा ने क्षमा याचना की।

च्यवन ने कहा कि राजन मेरे साथ जो अत्याचार हुआ है, उसका प्रायश्चित केवल यही होगा कि आप अपनी कन्या का विवाह मेरे साथ करें। च्यवन का उत्तर सुनकर राजा आपादमस्तक कांप उठे। दरअसल च्यवन वृद्ध हो गए, तिस पर कुरूपी और अंधे हैं। जुगुप्सा पैदा करनेवाले ऐसे विकृत पुरुष के साथ लावण्यमयी सुशीला और बुद्धिमती कन्या का विवाह। यह सर्वदा असंभव है। यही विचार करके राजा व्यथित हो राजमहल को लौट आए।

राजकुमारी सुकन्या को जब यह समाचार मालूम हुआ, उसने च्यवन के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की। राजा ने विवश होकर सुकन्या का विवाह

च्यवन के साथ संपन्न कर दिया। विवाह के बाद सुकन्या च्यवन के साथ चली गई। वह बड़ी श्रद्धा-भक्ति से पति की सेवा में लगी रही। उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने देती थी।

राजकुमारी सुकन्या की अद्भुत त्याग और बलिदान को देखकर देवतागण बहुत खुश हुए।

उन्होंने देवताओं के चिकित्सक अश्विनीकुमार को उनकी परीक्षा हेतु भेजा। सुकन्या ने अश्विनीकुमारों की बहुत सेवा की। सुकन्या की इस आयु में इतना बड़ा त्याग और पतिव्रता धर्म को देख कर अश्विनीकुमार बहुत प्रसन्न हुए। वे अंधे च्यवन ऋषि को एक दिव्य सरोवर के पास ले गये और डुबकी लगाने को कहा। इस डुबकी के फलस्वरूप च्यवन ऋषि की आँखों की रोशनी वापस या गई। साथ ही अश्विनीकुमार ने इन्हें एक दिव्य औषधि का राज बताया।

महर्षि च्यवन ने उनके बताये अनुसार जड़ी-बुटियों के मिश्रण से उस दिव्य औषधि को तैयार कर उसका सेवन किया। इस औषधि के सेवन से चमत्कारिक परिणाम सामने आया। कुछ ही महीने में च्यवन ऋषि का कायाकल्प हो गया और वे फिर से जवान हो गए। बाद में वह औषधि 'च्यवनप्राश' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इधर जब राजा शर्याति को च्यवन ऋषि की दृष्टि वापस आने तथा फिर से जवान होने की खबर मिली तब वे बहुत प्रसन्न हुये। इस खुशी में राजा ने च्यवन ऋषि के निर्देशन में यज्ञ करने का फैसला किया।

उस यज्ञ में जब अश्विनीकुमारों को भाग दिया जाने लगा तब देवराज इन्द्र ने आपत्ति की कि अश्विनीकुमार देवताओं के चिकित्सक हैं, इसलिये उन्हें यज्ञ का भाग लेने की पात्रता नहीं है। किन्तु च्यवन ऋषि इन्द्र की बातों को अनसुना कर अश्विनीकुमारों को सोमरस देने लगे। इससे क्रोधित होकर इन्द्र ने उन पर वज्र का प्रहार किया लेकिन ऋषि ने अपने तपोबल से वज्र को बीच में ही रोककर एक भयानक राक्षस उत्पन्न कर दिया। वह राक्षस इन्द्र को निगलने के लिये दौड़ पड़ा। इन्द्र ने भयभीत होकर अश्विनीकुमारों को यज्ञ का भाग देना स्वीकार कर लिया और च्यवन ऋषि ने उस राक्षस को भस्म करके इन्द्र को उसके कष्ट से मुक्ति दिलाई।

ग्रंथ

च्यवन मुनी द्वारा अनेक ग्रंथों की रचना हुई। उनके द्वारा रचित 'च्यवनस्मृति' में उन्होंने विभिन्न तथ्यों के महत्व को दर्शाया है। इसमें उन्होंने गोदान के महत्व के विषय में लिखा। इसके साथ ही बुरे कार्यों से बचने का मार्ग एवं प्रायश्चित का विधान भी बताया। 'भास्कर संहिता' में इन्होंने सूर्य उपासना और दिव्य चिकित्सा से युक्त ''जीवदान मंत्र'' भी रचा है, जो एक महत्वपूर्ण मंत्र है। अनेक महान् राजाओं ने इनके निर्णयों को अपने धर्म-कर्म में शामिल किया।

च्यवन ऋषि का आश्रम

कहा जाता है की इनका आश्रम उत्तरप्रदेश के मैनपुरी जिले से 18 किलोमीटर दूर औचा क्षेत्र में है। यह वही जगह है जहाँ ऐसी औषधि की खोज हुई थी, जिससे बुजुर्ग च्यवन ऋषि नौजवान हो गए थे। तभी से इसे च्यवनप्राश कहा जाता है। आज भी यहाँ ऋषि से जुड़े कुंड, टीले और अन्य चीजें मौजूद हैं। उनके आश्रम के पास अभी भी एक कुंड काफी प्रसिद्ध है। कहते हैं कि च्यवन कुंड में स्नान करने से आज भी कई तरह के बीमारी तथा चर्म रोग ठीक हो जाते हैं।

हरियाणा में जिला महेंद्रगढ़ के मुख्यालय नारनौल नगर से सात कि.मी.

की दूरी पर बसा है गाँव कुलताजपुर। इसी गाँव के मध्य स्थित प्रसिद्ध ढोसी की पहाड़ी पर अवस्थित है महर्षि च्यवन आश्रम। इस आश्रम को महर्षि च्यवन की तपोस्थली माना जाता है। मान्यता है कि इसी आश्रम में उन्होंने विश्व प्रसिद्ध औषधि च्यवनप्राश का निर्माण किया था।

आश्रम में सोमवती अमावस्या को विशाल मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें दूर-दराज से श्रद्धालु भाग लेते हैं। च्यवन ऋषि के आश्रम के संदर्भ में एक कथा प्रचलित है जिसका वर्णन धार्मिक ग्रंथों में भी मिलता है। महाभारत के मुताबिक ढोसी की पहाड़ी को आर्चिक पर्वत कहा जाता था। आर्चिक का अर्थ वेदों की ऋचाओं से समझा जाता है। कहा जाता है कि पुरातन काल में इस पर्वत पर अनेक संत-मुनि तपस्या करते थे और वेदों की ऋचाओं का पाठ करते थे इसलिए इस पर्वत को आर्चिक पर्वत कहा जाता था। कालांतर में इसे ढोसी कहा जाने लगा।

चौशाला में बना च्यवन ऋषि का मंदिर

हरियाणा में कैथल के गाँव चौशाला में स्थित च्यवन ऋषि का मंदिर प्रदेश में विख्यात है। आस-पास के गाँव के लोग चौशाला को चौशाला खेड़ा के नाम से भी जानते हैं। साल में चार बार, दो बार सावन माह और दो बार फाल्गुन माह में मंदिर में विशाल मेले लगते हैं। प्रदेश भर से भक्त यहाँ पूजा करने के लिए आते हैं। मुख्य रूप से पशु धन में सुख-शांति के लिए पूजा की जाती है। मंदिर के पीछे एक पुरानी मान्यता भी है। किसी समय में भृगु ऋषि के पुत्र च्यवन ऋषि ने कलायत के चौशाला गाँव स्थित प्राचीन कुंड में स्नान किया था। उस समय सरस्वती नदी का प्रवाह इस कुंड से होकर गुजरता था।

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

अध्याय - 12

वेंकटाचल पर श्री वेंकटेश्वर का मंदिर

श्री वेंकटेश्वर दिव्य-आनंदनिलय-विमान में रहकर भक्तों को दर्शन प्रदान कर रहे हैं।

विष्णु भगवान जब वैकुंठ से इस पृथ्वी पर आये थे, तब उनके लिए अपना कोई वास स्थान नहीं था। उनकी न माता थी - न ही पिता थे, न कोई पुत्र - पुत्री, और न कोई भाई - बन्धु। ब्रह्म ने वेंकटाद्रि पर एक इमली का वृक्ष सृजित किया तथा उसके नीचे एक वल्मीक (बिल)। ये स्वामिपुष्करिणी की दक्षिण दिशा में और उसके तट पर थे। विष्णु उस वल्मीक में दस हजार वर्ष तक रहे। उस समय उन्होंने किसी को भी दर्शन नहीं दिया। यहाँ तक कि उन्हें कोई देख भी न सके। लेकिन उस बिल से प्रकाश तो विकीर्ण हो रहा था। इस प्रकार कुछ समय बीता। आठवें युगांतर में द्वापरयुग बीता और कलियुग का आरंभ हो गया। कलियुग में ब्रह्म, कपिला गाय बनकर और शिव उसका बछडा बनकर उनको हर दिन दूध देने पृथ्वी पर अवतरित हुए। कपिला गाय हर दिन बिल में दूध की धारा छोडकर विष्णु की भूख मिटाती थी। कलियुग के प्रभाव से ही भूख लगती थी।

पुराणों में कहा गया है कि एक कृतयुग में, वैवश्वत मनु के शासन काल में, वायुदेव ने प्रभु श्रीनिवास की तपस्या की थी। तपस्या से प्रसन्न होकर वायुदेव को भगवान ने एक वर दिया और कहा कि वे श्रीदेवी और भूदेवी के साथ वेंकटाद्रि पर स्वामिपुष्करिणी के दक्षिणी तट पर बसेंगे। उनका विमान किसी से दर्शित नहीं होगा। इस रूप में वे कलियुगान्त तक रहेंगे। यह वायुदेव को दिया गया वरदान था। शिव के पुत्र स्कंद (कुमार स्वामी) ने भी स्वामी की तपस्या यहाँ की थी। बाद में अगस्त्य महर्षि की तपस्या से प्रसन्न होकर वेंकटेश्वर स्वामी ने उनको एक वरदान दिया। उसके अनुसार भगवान मानवों को अपना दर्शन प्रदान करने के लिए राजी हो गये। लेकिन वैकुंठ से पृथ्वी पर आया दिव्य विमान अदृश्य रहेगा। भगवान ने उस समय कहा था कि एक और भक्त मेरे लिए मंदिर और विमान का निर्माण करेगा कलियुग में। वराहस्वामी द्वारा पृथ्वी का उद्धार हुआ। राक्षस हिरण्याक्ष ने पृथ्वी को पाताल में पहुँचा दिया था। पृथ्वी के उद्धार के बाद वैकुंठ का क्रीडाचल भूमि

पर लाया गया। उसे (विमान) को वेंकटाचल पर बसाया भी गया। तब से श्रीनिवास स्वामिपुष्करिणी के तट पर रहने लगे। तट की दक्षिणी दिशा में मंदिर और विमान भी बनाये गये। वहीं श्रीनिवास का वास है।

विष्णु ने विमान में ही से ब्रह्म, ऋषि-मुनियों, दशरथ आदि को दर्शन दिया था। स्वामिपुष्करिणी तट पर ही ब्रह्म ने श्रीनिवास के उत्सव मनाये थे जो आगे ब्रह्मोत्सवों के नाम से हर वर्ष मनाये जा रहे हैं। स्वामी ने यहीं पर राजा शंखन को दर्शन देकर उन्हें पुनः राज्य सिद्धि का वर प्रदान किया था। आत्माराम नामक ब्राह्मण का उद्धार भी यहीं से संपन्न हुआ है। निषाध वसु इसी स्वामिपुष्करिणी के तट पर भगवान का दर्शन पाकर मुक्त हुआ। वसु तो भगवान को श्यामकान्न शहद मिलाकर हर दिन अर्पित करता था। रंगदास को इमली वृक्ष के नीचे के बिल से दर्शन दिया था स्वामी ने। रंगदास ने खुरदुरे पत्थरों से स्वामी के लिए चारों ओर दीवारें बनायी थीं। प्राकार और विमान का निर्माण राजा तोंडमान ने कराया था। असल में रंगदास ने ही अगले जन्म में तोंडमान राजा का जन्म लिया था। रंगदास और निषाध वसु ने मिलकर ही श्रीनिवास और श्री वराहस्वामी की स्वयंभू मूर्तियों को वल्मीक में (बिल में) पहले पाये थे। पहले का मंदिर प्राकार उन्हीं के समय में बना था। अगले जन्म में रंगदास ने ही राजा तोंडमान बनकर भगवान के आदेशानुसार ही मंदिर आदि का निर्माण कराया था।

श्री वराह ने भूदेवी को श्री वेंकटेश्वर की गाथा बतायी थी। उसके अनुसार अट्ठाईस चतुर्युगों के बाद (यानी कृत, त्रेता, द्वापर और कलियुग मिलकर एक चतुर्युग बनता है। ऐसे 28 चतुर्युगों के बाद) अंतिम द्वापरयुग में महाभारत युद्ध चला था। कलियुग का आरंभ महाभारत युद्ध की समाप्ति से होता है। कलियुगारंभ में भी शक, शूद्र आदि राजवंशों का समय बीत गया। उस समय के अंतराल में कोई भी श्री वेंकटेश्वर को पहचान नहीं सका। उनके निवास तक पहुँच नहीं पाये। तब जाकर चंद्रवंश में राजा मित्रवर्मा का जन्म हुआ। वे नारायणपुर को राजधानी बनाकर तूणीरमंडल पर राज्य करते थे। आकाशराजा उनके पुत्र ही थे।

आकाशराजा की पोषिता पुत्री पद्मावती थी। पद्मावती से श्रीनिवास का मिलन एक बगीचे में हुआ। तभी उन्होंने विरह तप्त होकर मणिमंटप में पहली बार प्रवेश किया। वहाँ शय्या पर प्रभु लेटे थे। इससे स्पष्ट है कि आकाशराजा के समय में ही भगवान का निवास मंदिर पहली बार बना है। वह भी पूर्णरूप से नहीं, केवल आंशिक रूप में, उस समय कुछ कमरे ही बने होंगे।

ऐतिहासक दृष्टि से देखा जाय तो सबसे पहले मणिमंटप निर्माण विजयनगर साम्राज्य के प्रधान मंत्री अमात्यशेखर मल्लना के द्वारा हुआ है। ये मल्लना ही श्रीमाधवदास हैं। ये चंद्रगिरि में रहते थे। (चंद्रगिरि किला तिरुपति के पास ही है। वह विजयनगर साम्राज्य की तीसरी राजधानी थी)। उनका समय शक संवत्सर 1339 था (सन् 1417 का समय है।) उन्होंने ही आनंदनिलय विमान का कुछ कार्य संपन्न किया है। इसके कुछ संकेत भी मिलते हैं। (तिरुपति प्राच्य लिखित भाण्डागार में मिलनेवाले एक लेख से विदित होता है - खं. I, क्रम संख्या 196 तथा 198. इससे यह स्पष्ट है कि आकाशराजा द्वारा निर्मित मणि-मण्टप मंदिर के अंदर का एक मंटप ही हो सकता है। हो सकता है कि यह आज द्वारपालकों के पीछे विलसित मंटप ही हो। इसे आज स्नपन मंटप कहते हैं।

चाहे कुछ भी हो, श्री वेंकटेश्वर भगवान के लिए तोंडमान के द्वारा मणिमण्टप और विमान का निर्माण सबसे पहले कराया गया है। उनकी ऐतिहासिकता और उनके द्वारा निर्मित मंदिर के अंशों के संबंध में स्पष्ट कहा नहीं जा सकता। परन्तु इतना तो है कि भारत के दक्षिण में निर्मित मंदिर आदि द्रविडियन और पल्लव शिल्पकला से युक्त है।

क्रमशः

इतने युगों के बाद भी दुनिया में ऐसी कोई घटना नहीं घटी है, जो 'महाभारत' में न हुआ हो। इसीलिए महाभारत अजर-अमर है।

महाभारत में वेदव्यास जी ने समय-समय पर मानव को पालन करने लायक धर्मों को किसी न किसी पात्र के द्वारा मानव समाज के सामने रखने की कोशिश की।

महाभारत के अंतर्गत आनेवाली 'शकुंतला' की कहानी पति-पत्नी के संबंधों और एक दूसरे के प्रति करने लायक धर्मों को बतानेवाली कहानी है। पति से तिरस्कृत होने पर शकुंतला प्रतिकूल परिस्थितियों से नहीं घबराती है, न पति की निंदा करती है और न ही भीरू बनकर आत्महत्या करना चाहती है। अपितु पति के सम्मुख सच्चाई लाकर उसे धर्म के रास्ते पर लाने की कोशिश करती है। पति और पत्नी के संबंधों के बारे में, पति के धर्मों के बारे में समझाने की कोशिश करती है। कथन है कि हमेशा मानव के सच्चे प्रयत्न को भगवान अपना साथ जरूर देता है। इसे सच साबित करते हुए आकाशवाणी शकुंतला की महानता और सतीत्व को सही समय पर सबके सामने प्रकट करती है।

शकुंतला पुरु वंश के महाराज दुष्यंत की पत्नी है, जिसके नाम से भारत देश को यह नाम आया, वह महान राजा भरत की माता है।

शकुंतला ऋषि विश्वामित्र और देव नर्तकी मेनका की पुत्री है। राजर्षि विश्वामित्र ब्रह्मर्षि बनने हेतु घोर तप करते समय उसके तप से डरकर देवराज इंद्र अपने इंद्रसभा की देव नर्तकी मेनका को ऋषि के तपोभंग करने के लिए भेजता है। ऋषि विश्वामित्र मेनका की सुंदरता से मुग्ध होकर, काम वश होकर तप छोड़कर उससे शादी कर लेता है। कुछ समय तक वे दोनों सुख जीवन बिताते हैं। मेनका एक पुत्री को जन्म देती है और उसे मालिनी नदी के किनारे रेत के ऊपर छोड़कर वापस स्वर्ग चली जाती है। महर्षि विश्वामित्र भी फिर तप करने तपोवन में चला जाता है। लेकिन ऋषि के तपोबल कारण शकुंत(पक्षी) उस बच्ची को जंगली जानवरों से बचाते रहते हैं।

एक दिन महर्षि कण्व अपने शिष्यों के साथ वन में से जाते समय उसकी नजर उस बच्ची पर पड़ती है जिसे शकुंत(पक्षी) बचा रहे हैं। ऋषि उस बच्ची को अपने आश्रम में ले जाकर पुत्री की तरह उसका पालन-पोषण करता है और शकुंतलों(पक्षियों) से पाला जाने के कारण उसका नाम 'शकुंतला' रखता है।

एक बार राजा दुष्यंत शिकार करते हुए जंगल में बहुत दूर निकल जाता है तब उसे बहुत प्यास लगती है। प्यास बुझाने हेतु आस-पास देखने पर उसे महर्षि कण्व के आश्रम दिखाई देता है। तब वह मंत्रियों, परिजनों को छोड़कर ऋषि के दर्शन करने के लिए अकेले आश्रम में जाता है। अंदर जाते ही वह एक अत्यंत सुंदर स्त्री को देखता है। वह राजा को देखते ही अतिथि सत्कार करना शुरू करती है। तब राजा दुष्यंत अपना परिचय देते हुए उस युवती से कहता है कि वह उस देश का राजा दुष्यंत है। विनोद के लिए शिकार करने आया है। कण्व महर्षि के आश्रम को देखकर ऋषि का दर्शन करने आया है और वह यह भी पूछता है कि ऋषि कहाँ गया है? कब आएँगे? तब वह सुंदरी कहती है कि ऋषि अभी-अभी फल लाने जंगल में गया है। राजा के आगमन की बात जानकर तुरंत लौट आएँगे। राजा उस

औरत को देखकर उसका परिचय पूछता है, तो वह कहती है कि वह महर्षि कण्व की पुत्री है। तब राजा दुष्यंत चकित होकर कहता है कि वह जानता है कि ऋषि कण्व संन्यासाश्रम स्वीकार किया है। तब शकुंतला उसकी पुत्री कैसे? तो राजा की शंका को दूर करती हुई वह कहती है कि वह मेनका और विश्वामित्र की पुत्री हैं। इससे पहले किसी ऋषि के पूछने पर ऋषि कण्व उससे शकुंतला के जन्म वृत्तांत को बताता है तो उस समय वहीं पर रही शकुंतला भी अपने जन्म के बारे में जान लेती है।

शकुंतला के जन्म वृत्तांत को सुनकर राजा दुष्यंत बहुत प्रसन्न होते हुए कहता है कि वह शकुंतला की सुंदरता को देखकर मुग्ध हो गया है। वह उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता है। क्षत्रिय आठ प्रकार से शादी कर सकते हैं। अब वह मन्मथ से प्रेरेपित होने के कारण तुरंत गांधर्व तरीके से शकुंतला को पत्नी बनाना चाहता है लेकिन शकुंतला कहती है कि जल्द ही उसके पिता कण्व आकर राजा से कन्यादान करेगा। लेकिन काम मोहित राजा दुष्यंत उसे समझाता है कि गांधर्व विधि से शादी करना गलत नहीं है। तब शकुंतला एक शर्त पर विवाह के लिए राजी हो जाती है कि उसके गर्भ से पैदा होनेवाला बेटा ही दुष्यंत के राज्य का युवराज बनेगा। दुष्यंत उस बात पर वादा करने के बाद वे दोनों गांधर्व विधि से विवाह कर लेते हैं। उसके बाद दोनों पति-पत्नी बनाकर खुशी से समय बिताने के बाद दुष्यंत शकुंतला को राज मर्यादा के अनुसार राज्य में बुला लेने का वादा करके लौट जाता है।

आश्रम को लौट कर आया कण्व महर्षि शकुंतला के हाव भावों को देखकर अपनी दिव्य दृष्टि से विषय जान लेता है। शर्मिंदा होनेवाली शकुंतला को समझाता है कि उसने अपने कुल गोत्रों के अनुसार योग्य पति को ही चुन लिया है। वह गर्भवति बनकर समस्त भूमंडल का पालन करनेवाला बालक को जन्म देनेवाली है। इस अवसर पर वह शकुंतला से कोई वर माँगने को कहता है तो शकुंतला यह वर माँगती है उसको पैदा होनेवाला बेटा दीर्घायु होने के साथ-साथ तंदुरुस्त, शक्तिशाली से वंश का उद्धारक होना चाहिए। उसका मन हमेशा धर्म पर ही अडिग रहना चाहिए। महर्षि कण्व शकुंतला को वह सब मिलने का आशीर्वाद देता है।

ऋषि कण्व शकुंतला को गर्भवति नारी के लायक सारे संस्कार करवाता है। एक शुभ मुहूर्त में शकुंतला शुभ लक्षण संपन्न बच्चे को जन्म देती है। नवजात शिशु के हाथ की रेखाओं को देखकर महर्षि कण्व कहता है कि वह जरूर चक्रवर्ती बनेगा। उसका नाम भरत रखा गया है। वह बालक बचपन में ही असीम बल पराक्रम दिखाते हुए बाघ,

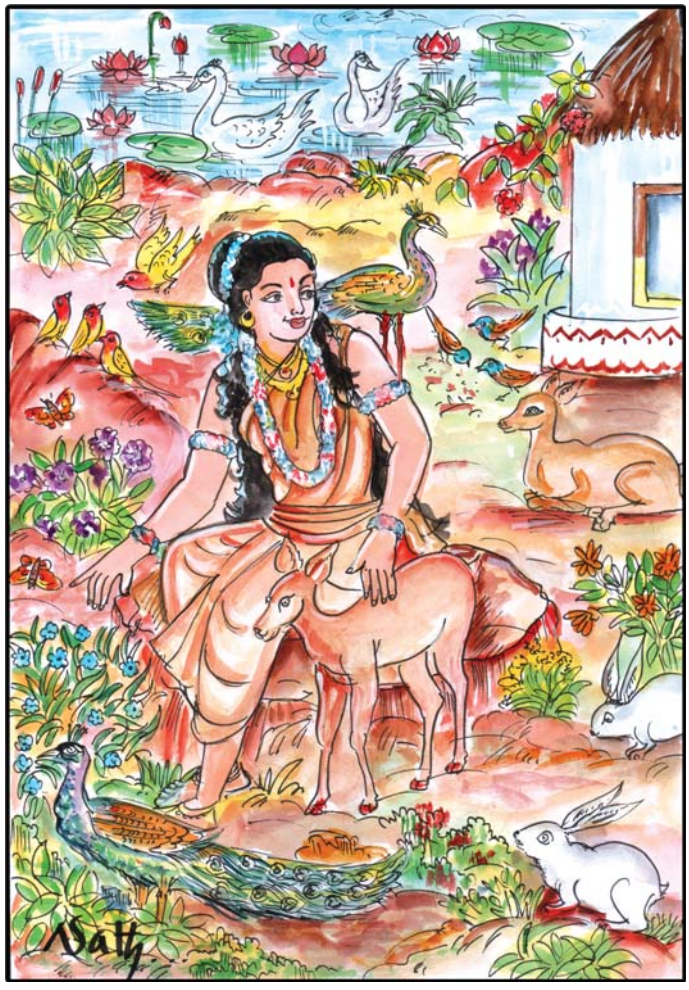

हाथी और शेर जैसे जानवरों को पकड़कर उन पर चढ़कर सवारी करते हुए उन्हें लाकर आश्रम के पेड़ों को बाँधना देखकर वहाँ के ऋषिगण बालक को सर्वदमन नाम से पुकारने लगते हैं।

एक दिन महर्षि कण्व शकुंतला को बुलाकर कहता है कि शादीशुदा औरत अधिक समय तक मायके में रहना उचित नहीं है इसलिए अब उसे राजा दुष्यंत के पास जाना ही ठीक होगा। शकुंतला भी खुशी से इस बात के लिए राजी हो जाती है। महर्षि कण्व उस ससुराल में रहनेलायक विधि-विधानों को समझाकर उसे पुत्र सहित राजा के पास भेज देता है।

शकुंतला अपने पुत्र के साथ जब राज दरबार में पहुँचती है, तब राजा दुष्यंत भरी सभा में मंत्री और पुरोहितों के साथ उपस्थित रहता है। लेकिन उसके बर्ताव से शकुंतला

घबराने लगती है कि राजा सच में उसे भूल गया है या जान बूझकर भूलने का नाटक कर रहा है। लेकिन यहाँ तक आने के बाद उसे याद दिलाना ही होगा। इसलिए उसे सब कुछ स्मरण में लाकर उसके पुत्र को उसे सौंप देना है। ऐसा सोचकर शकुंतला राजा से बीती बातें याद दिलाती हुई कहती है कि एक बार राजा दुष्यंत शिकार खेलने जंगल में आकर, कण्व आश्रम में शकुंतला को देखकर उससे शादी का प्रस्ताव रखा और दोनों ने गांधर्व विधि से विवाह किया। उदय के समय लगनेवाले सूरज की तरह तेजोवान यह बालक दुष्यंत का ही पुत्र है। पौर वंश के अलंकार है। इसलिए उसके दिए हुए वचन को याद करके राजा अब अपने पुत्र भरत को युवराज घोषित करना है।

शकुंतला की बातों को सुनकर दुष्यंत ने इस प्रकार कहा- ''हे सुंदरी! तुम कौन हो? मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा है। तुम इस तरह के असंदर्भ बातें क्यों कर रही हो? अब तेरी ये बातें बंद करो। जिस रास्ते से आई हो, उसी रास्ते से लौट कर चली जाओ।'' महराज की बातों को सुनकर शकुंतला स्तब्ध रह जाती है। गुस्से से उसकी आँखें लाल हो जाते हैं। आँसू बहाते हुए वह सर झुकाकर इस तरह कहती है -

''राजा, तुम सब कुछ जानकर भी अनजान बनकर बोल रहे हो। क्यों? तुम यह सोच रहे हो कि हम दोनों की मुलाकात हमारे सिवा और कोई नहीं जानता है। कोई गवाह नहीं है। इस हिम्मत से आप जैसे महान धर्मात्मा असत्य बोलना उचित नहीं है। हे राजा! हमारी शादी के लिए वेद, पंच भूत, धर्म, हृदय, यम, सूरज-चाँद, दिन और रात जैसे सब महा पदार्थ गवाह हैं। जब तक ये सब गवाह रहेंगे, तब

तक कोई भी मानव अपने आप को धोखा नहीं दे सकता है। कोई भी सत्य को छिपाकर नहीं रख सकते हैं। तुमने मुझे जो वादा किया था, वह मेरे साथ सब महान पदार्थों (अर्थात् ऊपर कहे गए पदार्थ) को मालूम है। तुम अपने आप को धोखा देने की कोशिश मत करना। मुझे अपमानित करना छोड़कर अपनाने की कोशिश करो। मैं तुमसे और एक बात कहना चाहती हूँ। सुनो! पतिव्रता, गुणवती, संतानवती, अपने मन के अनुकूल चलनेवाली पत्नी को इनकार किया मानव इह और पर दोनों में सुख प्राप्त नहीं कर पाता है। राजा, जिसकी पत्नी अनुकूल है, वही मानव सारे कर्माचरण कर सकते हैं। पुत्र संतान को प्राप्त कर सकते है। इतना ही नहीं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे पुरुषार्थों को पाने के लिए मन को खुशी देनेवाली पत्नी का साथ बहुत जरूरी है। वह सती उत्तम चरित्र बोधक और वंशाभिवृद्धि के लिए छड़ी जैसी है। मर्द के लिए गृहिणी से बढ़कर खुश देनेवाली दूसरी संपत्ति नहीं होगी। पत्नी-पति का अर्ध-शरीर है। ऐसी पत्नी का अपमान करना अधर्म है। उतना ही नहीं, पति अपनी पत्नी के गर्भ में प्रवेश होकर पुत्र के रूप में जन्म लेता है। उत्तम पुत्र माता-पिता के दोनों वंशों का उद्धार करता है। एक दिया और एक दिया को जलाने की तरह तुम्हारे शरीर से ही यह तुम्हारा उत्तम पुत्र का जन्म हुआ है। इसे पास ले लो। आलिंगन करो। पुत्रालिंगन के समान खुशी की बात नहीं है।

अशरीर वाणी ने कहा कि तुम्हारा यह पुत्र कई यज्ञों को करके तुम्हारे पुरु वंश का उद्धार करेगा। ऐसा पुत्र अब तुम्हारे सामने रहने पर भी तुम उसे तिरस्कार कर रहे हो। क्यों? हे राजा, तुम सत्यव्रत हो। तुम जानते हो कि हजार अश्वमेध यज्ञ फल को एक ओर और एक सत्य वाक्य को दूसरी ओर रखने पर सत्य वाक्य ही महान है। कितने वेद पढ़ने पर भी वह सत्य के समान नहीं है इसलिए हमारी शादी के समय तुमसे दिए गए वचन को याद करो। मैं महर्षि विश्वामित्र और मेनका की पुत्री सत्य पर प्रमाण करते हुए ये सब कह रही हूँ।''

इस प्रकार कितना समझाने पर भी राजा तुष्यंत शकुंतला को पहचानकर उसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता है। शकुंतला दुखित होती हुई सोचती है कि मैं बहुत अभागिन हूँ। जन्म लेते ही माँ-बाप छोडकर चले गए। शादी के बाद पति भी मुझे अकेले छोड़ रहे है।

शकुंतला व्यथित मन से राज दरबार से बाहर जाने के लिए तैयार होती है, तब अशरीर वाणी इस प्रकार कहती है कि ''हे राजा! यह शकुंतला तेरी पत्नी है। यह बालक तेरा ही पुत्र है। शकुंतला पतिव्रता नारी है। उसने जो कुछ भी कहा, वह सब सत्य है। तुम इन दोनों को स्वीकार करो।'' तब राजा दुष्यंत बहुत प्रसन्नता से सभा में घोषित करता है कि उसे यह बात अच्छी तरह से मालूम है। लोक निंदा से डरकर उसे ऐसा कहा है। उसने शकुंतला को गांन्धर्व विधि से विवाह किया है। यह बात उन दोनों के सिवा और कोई नहीं जानता है। अब सब जान गए कि शकुंतला पतिव्रता है। बाद में वह भरत को प्यार से नजदीक लेकर आलिंगन करके उसे युवराज घोषित करता है। शकुंतला को पटरानी बनाता है। कई सालों तक वे दोनों खुशी से जिंदगी बिताकर अंत में भरत को राजा बनाकर खुद तप करने चले जाते हैं।

कालिदास की 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' - 'महाभारत' की इस प्रसिद्ध कहानी को संस्कृत के महान कवि कालिदास ने नाटक के रूप में लिखा है। तब वह नाटक की दृष्टि से मूल कथा में कुछ तब्दीलियाँ की। राजा के विचारों में डूबी शकुंतला ऋषि दुर्वासा को अतिथि सत्कार नहीं करने के कारण वह कृद्ध होकर शाप देना, शादी के समय राजा द्वारा दी गई अंगूठी को शकुंतला खो देना, अंगूठी देखने के बाद राजा को सारी बातें याद आना कवि कालिदास की कल्पनाएँ हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता का कथन

-श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

आमुख

श्रीमद्भगवद्गीता साक्षात् भगवान की दिव्यवाणी है। इसकी महिमा अपार और अपरिमित है। ऐसी भगवद्गीता के माहात्म्य को केवल चंद वचनों में बरन करने को किसी से साध्य नहीं होता, क्योंकि यह कृति एक परम रहस्य ग्रन्थ है।

भगवद्गीता समस्त वेदों का सार है। इसकी भाषा संस्कृत है, जो अति सरल, परम सुंदर है। तनिक-से अभ्यास-मात्र से गीता सुलभ तौर से बोध होने वाला है।

गीता का आशय अति गंभीर है। यह ऐसी वस्तु है, जो जीवन-पर्यन्त अभ्यासन-योग्य है। जो भी मानव इसका नित पारायण करेगा, उस मनुष्य व पाठक की स्थायी-मात्र गुणक से नित्य-नूतन भावों की उत्पत्ति उसमें होती रहेगी।

आइये ऐसे नित्य-यौवन गीताशास्त्र के चन्द श्लोकों का यहाँ हम विश्लेषण पा लेंगे -

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन।

न तदस्ति विना यत् स्यात् मया भूतं चराचरम्।। (गीता 10-39)

''हे, अर्जुन! इस समस्त भूतों की सृष्टि का मूल और उत्पादक बीज मैं ही हूँ। मेरे बिना सब सूना है, क्योंकि इस चर-अचर सृष्टि की कोई भी प्राणी मेरे अभाव में रह नहीं सकता। मेरे बिना उनका अस्थित्व नहीं हो पाता।''

इस समस्त चर-अचर या स्थावर-जंगम प्रकृति में हुए समस्त प्राणियों का कारण श्रीकृष्ण अपने को बता रहा है। सृष्टि का निमित्त कारण, भौतिक कारण दोनों के होने का कारण भगवान श्रीकृष्ण ही है। यानी-जगत की सृष्टि कर, व्यक्त करने के काम की सृष्टि का वही कर्ता है।

इस गोचर सृष्टि के लिए आवश्यक वस्तु या पदारथ भगवान कृष्ण से ही उत्पन्न होने वाली चीजें हैं।

इस श्लोक में भगवान घोषित करता है कि 'आप स्वयं सनातन उत्पादक बीज है।' वह प्रकटित कर रहा है कि वह स्वयं इस गोचर-अगोचर प्रकृति का मूलभूत हेतु है। भगवान की जोरदार उवाचा है कि उसके अस्थित्व व व्याप्ति के अभाव में किसी का भी अस्थित्व न होगा।

प्राणियों के अंडज, जरायुज, स्वेदज, उद्भिज आदियों के अलावा और भी प्राणी होते हैं। ये भी भगवान के ही रूप बताये जाते हैं।

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः।

इंद्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना।।

(गीता-10-22)

''मैं चारों वेदों में 'सामवेद' बन कर हूँ। देवताओं में मैं सर्वश्रेष्ठ देवता 'इन्द्र' हूँ। इन्द्रियों में मैं 'मन' बन कर हूँ। प्राणियों में 'चैतन्य' मैं ही हूँ।''

1) वेद चार विभागों में विभाजित होकर हैं। यथा- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वणवेद। इन चारों वेदों में सामवेद - विश्व को निर्वहित देवताओं में प्रकटित भगवान की महिमाओं का विवरण देता है।

सामवेद गेय-प्रधान है। वह सुर-सुन्दर ढ़ंग में गाया जाता है। सामवेद संगीत-प्रधान हो करके अत्यंत मनोहर होता है और भगवान की स्तुति में गाया जाता है। वह समझने वालों को परम मनोहर होता है और सुनने वालों में भक्ति का उद्गार करता है।

2) 'वासव' देवताओं के प्रभु 'इन्द्र' का एक और नाम है। कीर्ति, शक्ति, ओहदाओं में उससे मात खाने वाला प्राणी और कोई नहीं है। अनेक जन्मों के संचित पुण्यफल के प्रतिरूप में किसी जीवात्मा को इन्द्र-पद पुरस्कार के तौर पर दिया जाता है।

इस प्रकार, इन्द्र भगवान की देदीप्यमान विभूति का सूचक है।

3) मन से जुड़े रहने से ही पाँचों इन्द्रियों का काम चलता है।

उदाहरण के लिए - कानों को - दूसरों की कही जाती हुई बातें सुनाई देती रहने पर भी, मन के जागृत न होने पर या मन सावधान न रहके कहीं और विचरने पर, उनकी कही हुई बात हमें अवगत न होगी। मन - इन्द्रियों का सम्राट् है।

'वह अत्यंत शक्तिशाली तत्व है' कहते हुए भगवान श्रीकृष्ण अपने को मन स्वरूप बता रहा है। भगवान का कहना है वह स्वयं 'मन' के रूप में समस्त प्राणियों में वास करता है।

4) चेतना जो है, वह आत्मा का प्रधान गुण है। चैतन्य या चेतना जड़-पदार्थ से अत्यंत भिन्न तत्व है।

जिन्दा मनुष्य और मृत-मनुष्य में भेद यह है कि जिन्दा मनुष्य में चैतन्य व प्राणशक्ति होती है। मृत मानव में वह चेतनाशक्ति न होती है। आत्मा में चैतन्य नामक तत्व भगवान की दिव्य शक्ति से होता है। चैतन्य भगवान का ही प्रतिरूप है। अतएव, वेद बताते हैं कि 'चेतनश्चेतनानाम्' अर्थात् 'चैतन्य पदार्थों में चैतन्य भगवान ही है।' - (कठोपनिषत्- 2.2.13)

प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम्।

मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम्।। (गीता-10-30)

''दैत्यों में मैं 'प्रह्लाद' हूँ। गणन करने वालों में (गणकों) में मैं 'काल' (समय) हूँ। जंतुओं में मैं मृगों के राजा 'सिंह' हूँ। और पक्षियों में मैं पक्षिराजा 'गरुत्मान' स्वयं हूँ।''

विवरण :

1) राक्षसों के महाशक्तिशाली राजा हिरण्यकशिप का पुत्र बनके प्रह्लाद ने जनम लिया था। प्रह्लाद विष्णु-भक्तों में प्रमुख माना जाता है। यही कारण है कि प्रह्लाद राक्षस होकर भी भगवान की महाविभूति का प्रचार किया था।

2) काल इस विश्व में सब से बलवान एक अथाह तत्व है। काल बड़े-बड़े अस्थित्वों को भी अपने आधीन कर लेता है।

3) गंभीर रूप और तेजवाला सिंह समूचे जंगल का सम्राट होता है। और भी, जानवरों में भगवान की शक्ति-संपदा शेर में व्यक्त होती रहती है।

4) गरुत्मान सर्व, शक्तिमान पक्षी है और वह स्वयं भगवान विष्णुदेव का वाहन है। गरुत्मान ने अपनी माँ विनता का दास्य-निर्मूलन के लिए अकेला स्वर्गलोक पर हमला बोल कर, अमृत ला पाया था।

उपसंहार

गीताकार का कहना है कि भगवान स्वयं सर्वशक्तिमान है। इस सृष्टि में हुए सर्वाधिक शक्तिशाली प्राणियों में हम भगवान का रूप-दर्शन कर सकेंगे। भगवान के बताये रूप-तत्वों को नमन कर, हम भगवान का आशीष पा सकेंगे।

सेब का आरोग्य में लाभ

- डॉ.सुमा जोषि

सेब एक कुरकुरा, चमकीले रंग का फल है, जो सबसे लोकप्रिय है। पुरानी कहावत है, ''प्रतिदिन एक सेब डॉक्टर को दूर रखता है।'' हालाँकि सेब खाना कोई इलाज नहीं है, लेकिन यह स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।

सेब का Latin name है Malus domestica और इसका परिवार है Rosaceae. सेब मुख्य रूप से ताजे फल के रूप में बिक्री के लिए उगाए जाते हैं। हालांकी सेब का उपयोग व्यावसायिक रूप से सिरका, जूस जेली, सेब की चटनी और सेब के मक्खन के लिए भी किया जाता है और पाई स्टॉक के रूप में डिब्बाबंद किया जाता है। वैश्विक फसल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा साइडर, वाइन और ब्रांडी के लिए भी उपयोग किया जाता है। ताजे सेबों को कच्चा या पकाकर खाया जाता है।

सेब के पेड आम तौर पर छोटे होते हैं। यदि बिना काटे छोड दिया तो 9 मीटर की ऊँचाई तक पहुँच जायेगा। छाल आमतौर पर भूरी और पपडीदार होती है। साधारण पत्तियाँ आकार में लगभग अण्डाकार होती हैं और आमतौर पर किनारों पर बारीक दाँत होते हैं। सेब के फूल पाँच सफेद पंखुडियों के साथ दिखावटी होते हैं जो अक्सर गुलाबी रंग के होते हैं और कई पुंकेसर होते हैं। फूलों का परागण मधुमक्खियों और अन्य कीडों द्वारा किया जाता है और अधिकांश किस्मों को निषेचन के लिए क्रॉस-पराग की आवश्यकता होती है। सेब स्वयं एक मांसल है जिसमें पका हुआ अण्डाशय और आस-पास के ऊतक दोनों मांसल और खाने योग्य बन जाते हैं।

सेब के पोषण संबंधी तथ्य

यहाँ एक कच्चे, बिना छिलकेवाले, मध्यम आकार के सेब (182 grams) के लिए पोषण संबंधी तथ्य दिये गए हैं। Calories - 94.6, Sugar - 18.9 grams, Water - 156 grams, Fiber - 4.37 grams, Protein - 0.43 grams, Fat - 0.3 grams, Carbs - 25.1 grams. सेब मीठा या खट्टा हो सकता है और इसका स्वाद इस बात पर निर्भर हो सकता है कि किस प्रकार का सेब खा रहे हैं। इसके कई किस्में हैं, जिनमें शामिल हैं:- Red delicious, Melntosh, Crispin, Gala, Granny smith, Fuji, Honeycrisp.

जहाँ तक आयुर्वेद गुणों की बात है, सेब का स्वाद मीठा से कसैला होता है, पचन के बाद मीठा होता है। इसका वीर्य ठण्डा होता है, पचाने में भारी हो सकता हैं।

सेब के प्रयोग

सेब को पोषक तत्वों से भरपूर फल माना जाता है, जिसका अर्थ है कि वे प्रतिसेवन में बहुत सारे पोषक तत्व प्रदान करते हैं। सेब विशेष रूप से अपने उच्च फाइबर और पानी की मात्रा के कारण पेट भरनेवाला होता है। इसीलिए वजन घटाने में मदद कर सकता है। सेब को हृदयरोग की कम संभावना से जोडा गया है। सेब कई तरह से हृदय स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। इनमें घुलनशील फाइबर की मात्रा अधिक होती है, जो कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मद करता है। इनमें पॉलीफेनोल्स भी होते हैं जो निम्न रक्तचाप और स्ट्रोक की संभावना से जुडे होते हैं।

सेब फाइबर और विटामिन-सी का अच्छा स्त्रोत हैं। इनमें विटामिन-ई और पॉलीफेनॉल जैसे एंटी-आक्सीडेंट भी होते हैं, जो फल के कई स्वास्थ्य लाभों में योगदान करते हैं।

सेब खाने से टाइप-2 मधुमेह का खतरा कम होता है, संभवतः इसमें मौजूद पॉलीफेनोल सामग्री के कारण।

सेब में पाये जानेवाला, फाइबर आन्त-अनुकूल बैक्टीरिया को बेहतर बनाता है। इसी कारण से पुरानी बिमारियों से या दीर्घकालीन से होनेवाले बिमारियों से बचने में यह मदद करता है।

सेब के फाइबर और एंटी-ऑक्सीडेंट सामग्री को कुछ प्रकार के कैंसर होने की कम संभावना से जोडा गया है। हालाँकि, मनुष्यों पर अधिक शोध की आवश्यकता है।

सेब त्वचा पर लाभकारी प्रभाव डाल सकता हैं क्योंकि सेब के रस में फ्लेवोनोइड्स होते हैं।

सेब में एंटी-ऑक्सीडेंट गुण होते हैं जो त्वचा को मुलायम रखने, त्वचा की सतह की नमी बनाए रखने और त्वचा रोगों को कम करने में मदद कर सकते हैं।

रोजाना सेब खाने का एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह कैंसर के विकास के जोखिम को कम करने में मदद कर सकता है।

सेब के सेवन से गर्भावस्था में लाभ हो सकता है और बच्चों में फेफडों की बीमरी और एक्जिमा के विकास का खतरा कम हो सकता है। इससे शिशुओं की प्रतिरक्षा प्रणाली को भी फायदा हो सकता है।

एक पशु मॉडल में एक अध्ययन से सेब में एंटी-आक्सीडेंट यौगिकों के कारण कुल कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स के स्तर में कमी देखी गई। यह मनुष्यों में रक्त कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में उपयोगी हो सकता है।

सेब विटामिन-सी और बायोएक्टिव यौगिकों के कारण प्रतिरक्षा को बढ़ा सकता है, जो एनीमिया में सहायक हो सकता है।

सेब के अर्क से गठिया और किडनी संबंधी बिमारियों जैसी विभिन्न स्थितियों को प्रभावी ढ़ंग से प्रबंधित किया जा सकता है।

2014 के एक अध्ययन में पाया गया कि सेब जैसे फल, जिसमें फिसेटिन नामक यौगिक होता है, अल्जाइमर को रोक सकता है और स्मृति हानि से बचा सकता है।

फ्लोरिडजिन नामक एक अद्वितीय हड्डी-निर्माण फाइटोन्यूट्रिएंट के कारण, सेब हड्डियों के घनत्व में सुधार करने और रजोनिवृत्ति के बाद महिलाओं के लिए हड्डियों के टूटने को कम करने में मदद कर सकता है।

सेब के अधिक सेवन से होनेवाले दुष्प्रभाव

औसतन एक व्यक्ति एक दिन में एक से दो सेब खा सकता है। यदि इससे अधिक ले रहे हैं, तो आप संभवतः कुछ खतरनाक और असुविधाजनक दुष्प्रभावों का अनुभव कर सकते हैं।

फाइबर हमारे पाचन स्वास्थ्य में सुधार करता है लेकिन इसकी अधिक मात्रा प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है, जिससे सूजन और कब्ज हो सकता है।

बहुत अधिक सेब खाने से रक्त शर्करा बढ़ सकती है क्योंकि यह कार्बोहाइड्रेट से भरपूर होता है।

जब ज्यादा खाने से वजन घटानें में कठिनता आ सकती है।

सेब अम्लीय होते हैं और इसलिए अधिक मात्रा दान्तों को नुकसान पहुँचा सकती है।

उन लोगों को सेब खाने की सलाह नहीं दी जाती है जो बार-बार पेट फूलने का अनुभव करते हैं या जिन्हें गैस्ट्रिक की समस्या है। सेब उन खाद्य पदार्थों में उच्च स्थान पर है जिनमें चीनी होती है, जिसे पचाना मुश्किल होता है।

''स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।''

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - आचार्य के.सूर्यनारायण
अनुवाद - श्री अवधेष कुमार शर्मा

एक त्रिंशः पाठः - इक्कीसवा पाठ

युष्माभिः = तुम्हारे द्वारा	युद्धम् = युद्ध	दृष्ट्वा = देखकर	पीत्वा = पीकर
मार्जालेन = बिल्ली ने (द्वारा)	मास्तु = नही	द्रष्टुम् = देखने के लिए	वसति = रहता है
मूषकैः = चूहों के द्वारा	भवति = होता है	प्रष्टुम् = पूछने के लिए	चलति = चलता

प्रश्न : (अ)

1. मूषकाः मार्जालैः युद्धं कुर्वन्ति।
2. वृक्षाः चलन्ति।
3. बालकाः क्षीरं पीत्वा अङ्गणेषु चरन्ति।
4. श्वः प्रातः अहं त्वां द्रष्टुम् आगमिष्यमि।
5. त्वम् अद्यः मम जनकं दृष्ट्वा आगच्छ।
6. अस्मदनुजः ब्राह्मणान् प्रष्टुम् अगच्छत्।
7. एते तत्र किं करिष्यन्ति वा पृष्ट्वा आगच्छ।
8. मास्तु! अहमेव गमिष्यामि। त्वम् अत्र वस।
9. एषः बालकः श्वः ब्राह्मणः भविष्यति।
10. त्वम् इदानीं कुत्र गन्तुं चलसि वा वद।

जवाब : (अ)

1. चूहे बिल्लियों के साथ युद्ध कर रहें है।
2. वृक्ष चल रहें हैं।
3. बालक दूध पीकर आँगन में घूम रहे है।
4. कल सुबह मैं तुम्हें देखने केलिए आऊँगा।
5. तुम आज मेरे पिता को देखकर आओं।
6. मेरा अनुज(छोटा) ब्राह्मणों को पूछने के लिए गया है।
7. ये सब वहाँ क्या करेंगे पूछकर आओ।
8. नही! मैं ही जाऊँगा। तुम यहीं रहो।
9. ये बालक कल ब्राह्मण होगा।
10. तुम अब कहाँ जाना चाहते हो बोलो।

प्रश्न : (आ)

1. तुम सब हमारे साथ युद्ध करेंगे क्या?
2. मुझे वहाँ जाना है।
3. तुम्हे स्वयं घी ले करके आना चाहिए?
4. उनके द्वारा हमारा घर देखा जाये।
5. किनको देखने के लिए गया था?
6. इनको बुलाकर हमारे पिता को यहाँ आना है ऐसा है बोलो?
7. नही तो! तुम क्यों उनके साथ युद्ध कियें?
8. तुम बालक न।
9. जल्दी चलो कोई आ रहें है।
10. आज हमारे द्वारा उनके घर में भोजन के लिए जाना है। शीघ्र स्नान करो।

जवाब : (आ)

1. यूयम् अस्माभिः युद्धं करिष्यन्ति वा?
2. मया तत्र गन्तव्यम्।
3. त्वं स्वयमेव घृतं स्वीकृत्य आगन्तव्यम्।
4. तैः अस्मदगृहं द्रष्टव्यम्।
5. केषां दर्शनार्थं अगच्छः?
6. एतान् आहूय अस्मद् पितरम् अत्र आगन्तव्यम् इति वद।
7. मास्तु! त्वं किमर्थं तै सह युद्धं कृतवान्?
8. त्वं बालकः खलु।
9. शीघ्रं चल केऽपि आगच्छन्ति।
10. अद्य अस्माभिः तेषां गृहे भोजनार्थं गमनमस्ति शीघ्रं स्नानं कुरुत।

दिसंबर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - शारीरिक सुख की कमी होते हुए भी अन्य कार्यों में साहस पूर्वक कार्य सम्पादन करेंगे। बिना सोचे समझे किसी भी कार्यों में संलग्न न हो वरना असफलता प्राप्त होंगे, सोच समझकर कार्य का निर्णय करें। निरर्थक विवाद, मतभेद, घात-पात, सामाजिक उलझनों में वृद्धि होगी। मासान्त सुखदायक वृद्धिदायक रहेगा।

वृषभ राशि - रोगियों के लिए यह माह अशुभफलदायक रहेगा, सावधान होकर रहे। अपनों का असहयोग जिससे मन अशान्त रहेगा, लाभ अल्प, खर्च अधिक। श्रमिक सफलता में बाधा, संतान कष्ट, पारिवारिक उलझन, शैक्षणिक अवरोध, व्यापार सामान्य रहेगा। मासान्त कुछ शुभदायक रहेगा, जिससे अभिष्टसिद्धि होगी।

मिथुन राशि - यह माह आपके लिए शुभफलदायक रहेगा। आरोग्य सुख उत्तम रहेगा, अपने बुद्धि विवेक और परिश्रम प्रयास के बिगड़ा काम बना लेंगे। व्यावसायिक वृद्धि। धनलाभ, दिनचर्या व्यवस्थित, बौद्धिक विकास, अपनों का-कुटुम्बजनों का सहयोग सुख प्राप्त होंगे।

कर्कटक राशि - अन्न, वस्त्र, धन-धान्य प्राप्ति। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। काय सुख प्राप्त होंगे। मित्रों का सहयोग, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। निर्माण कार्यों में प्रगति। सुखद यात्रा, नौकरी में उल्लास। सामाजिक विकास, धार्मिक कार्यों में रुचि। पारिवारिक सुख। छात्रों के लिए सुअवसर। विद्या-बुद्धि में विकास, शैक्षणिक यात्रा।

सिंह राशि - उग्र-क्रूर कर्मों में रुचि, प्रशासनिक विचारधारा में वृद्धि, उदर विकार, कार्यों में श्रमपूर्वक सफलता। निर्माण कार्यों में प्रगति, पारिवारिक संलग्नता। विपरीत स्थितियों में क्रमशः सुधार, व्यापारिक अनुकूलता। मासान्त सुखदायक रहेगा। विद्या में प्रगति, व्यापार वृद्धि, पदोन्नति। यत्र तत्र सुखमय यात्रा।

कन्या राशि - यह माह आपके लिए उत्तम रहेगा। मन में शुभ विचारों का उदय, काय सुख, सौहार्द्र की वृद्धि, शक्ति संवर्धन, समसामयिक सामाजिक विकास, व्यवस्थित दिनचर्या। गृह-भूमि-भवन-वाहनादि सुख एवं लाभ। छात्रों के लिए उत्तम अवसर, विद्या बुद्धि का विकास। व्यापार वृद्धि, धनलाभ, साधु समागम, मित्रों का सहयोग।

तुला राशि - मानसिक व्यथा से छुटकारा, दुष्प्रवृत्ति का नाश, मनोबल में वृद्धि, सकारात्मक सोच से कार्यों में प्रगति। अभीष्ट कार्यों की सिद्धि, मनोकामना सिद्ध, राजकीय धन सहयोग, प्रतियोगी क्षेत्रों में सफलता मिलेगी। अपनों का सहयोग जिससे धनागम में वृद्धि, यश-प्रतिष्ठा वृद्धि, पुत्र सुख, व्यापारिक सफलता।

वृश्चिक राशि - यह माह आपके लिए उत्तम रहेगा। शरीर स्वस्थ, आर्थिक मजबूति, प्रशासनिक सोच विचारधारा में तत्पर। छात्रों के लिए प्रितियोगी क्षेत्र में असफलता। पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि, धनलाभ, व्यापार में प्रगति। अपनों का पूर्ण सहयोग, मित्रों की सहायता। संतान सुख, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा।

धनुष राशि - शारीरिक कष्ट, मानसिक तनाव, वाद-विवाद, व्यर्थ यात्रा, व्यथा। लाभ कम-खर्च अधिक, निर्माण कार्यों में प्रगति। पारिवारिक सहयोग प्राप्त होंगे। छात्रों को पठन-पाठन की तरफ रुझान, उच्च पदाधिकारियों के सहयोग से कार्यों में प्रगति, पदोन्नति। रोजी-रोजगार में अनुकूलता। उदर-विकार, खान पान पर विशेष ध्यान रखे।

मकर राशि - स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आर्थिक समोन्नति, प्रशासनिक कार्यों में सफलता। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। कार्यक्षेत्र की विघ्न-बाधाओं का शमन, सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहण, संतान सुख, धार्मिक कार्यों में रुचि। पठन-पाठन में वृद्धि। मासान्त कुछ कष्टदायक रहेगा।

कुंभ राशि - यह मास आपके लिए उत्तम रहेगा। शारीरिक सुख उत्तम रहेगा, सर्वतोमुखी सफलता, आपके प्रभाव प्रताप की वृद्धि होगी। सामयिक सामाजिक विकास, यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि। अनेकानेक स्त्रोत्रों द्वारा धनलाभ, व्यापारिक क्षेत्रों में उन्नति।

मीन राशि - काय सुख, स्वास्थ्य सुख, धनलाभ। उच्च पदाधिकारियों से ताल मेल अच्छे रखने से रुके काम पूरे होंगे, पदोन्नति, आर्थिक स्थिति मजबूत होंगे। स्थिर जायदाद संबंधित कामों में सफलता। अनेकानेक स्त्रोत्रों द्वारा धनलाभ, व्यावसायिक क्षेत्रों में वृद्धि। महिलाओं का सम्मान करें अनेक फल प्राप्त होंगे, विशेषकर माता की सेवा करें। यत्र तत्र यात्रा योग बन रहा है।

नीतिकथा

नाम मंत्र स्मरण का महत्व

- श्रीमती प्रेमा रामनाथन

हम तो जानते हैं कि देवर्षि नारद भगवान विष्णु के महान भक्त हैं। वे सदा भगवान श्री नारायण का नाम स्मरण किया करते हैं। किसी भी विषय को बताने के पूर्व वे पहले यही कहा करते कि नारायण! नारायण! इस प्रकार वे हर जगह नारायण का नाम स्मरण किया करते थे। एक बार उनके मन में एक संदेह पैदा हुआ। उन्होंने सोचा कि हम तो हर बार नारायण का मंत्र स्मरण किया करते हैं, असल में उस नाम मंत्र का क्या महत्व है? इस विचार से वे भगवान विष्णु के पास जा पहुँचे। उन्होंने श्री विष्णु का नमस्कार करते हुए अपना संदेह पूछा, ''भगवान मैं तो आपका नाम सदा याद करता रहता हूँ। अब मैं यह जानना चाहता हूँ कि उस नाम का क्या महत्व है?''

देवर्षि नारद की बात सुनकर भगवान विष्णु मुस्कुरा उठे। उन्होंने नारद को देखकर कहा, ''देवर्षि! आप चिंता न करें। आपको नारायण नाम के महत्व के बारे में उठे संदेह को दूर करना मेरा कर्तव्य है। इसके लिए आपको मेरे कहे अनुसार एक काम करना है। क्या आप कर सकते हैं?'' यह सुनकर नारद ने कहा, ''भगवान आप बताइये, उसे तुरंत करने को तैयार हूँ।'' नारद को देखकर भगवान विष्णु ने कहा, ''यहाँ देखिये! जमीन पर एक कीडा पडा है।'' भगवान की बात सुनकर नारद ने वहाँ देखा और पाया कि एक कीडा जमीन पर रेंग रहा है। उसके बाद भगवान विष्णु ने नारद को उसे दिखाते हुए कहा, ''आप जरा उस कीडे के निकट जाकर नारायण नाम मंत्र को तीन बार कहिये, उसके बाद क्या होता है देखिये।'' नारद ने भी कीडे के निकट जाकर नारायण नाम मंत्र को तीन बार कहा। हाय! वह कीडा थोडे ही समय में मर गया। यह देखकर नारद को बडा दुःख हुआ। उसके बाद वे भगवान विष्णु के पास आकर सारी बातें बतायी।

नारद की बातें सुनने के बाद भगवान विष्णु ने नारद को देख कर कहा, ''वहाँ देखिये उस खिले पुष्प पर एक सुंदर तितली बैठी है। अब आप उसके निकट जाकर उसके कानों में नारायण नाम मंत्र को तीन बार कहिये।'' भगवान की बात मानकर नारद तितली के निकट गये और उन्होंने धीरे से नारायण नाम मंत्र को उसके कान में सुनाया। हाय! क्या हुआ! वह तितली कुछ ही क्षण में तडप तडप कर मर गयी। तितली की मृत्यु से नारद का मन अत्यंत दुखित हुआ। उन्होंने भगवान विष्णु के पास आकर सारी बातें सुनायी।

अब भगवान विष्णु ने नारद को छलांग मारकर आते हिरण के एक शावक को दिखाकर कहा, ''आप उस शावक के पास जाकर उसके कान में नारायण नाम मंत्र को तीन बार सुनाकर आइये।'' कीडे और तितली की मृत्यु से अत्यंत दुखित देवर्षि नारद को हिरण के पास जाने की इच्छा नहीं थी। फिर भी भगवान विष्णु की आज्ञा को वे कैसे ठुकरा सकते हैं। इसलिये वे बेमन उस शावक के पास गये और उन्होंने उसके कान में तीन बार नारायण नाम मंत्र को सुनाया। शोक! वह हिरण शावक भी थोडे ही समय में तडप-तडप कर मर गया। यह देखकर नारद को बडा धक्का लगा। वे एक दम भयभीत होकर भगवान विष्णु के पास आये और सारी बातें सुनायी। सब सुनने के बाद भगवान विष्णु ने नारद को

दूर घास चरते एक बछडे को दिखाया और कहा कि अब आप उस बछडे के पास जाकर उसके कान में नारायण नाम मंत्र को सुनाइये। परंतु अब नारद में किसी और के कान में नारायण नाम मंत्र को सुनाने की हिम्मत छूट गयी थी। फिर भी वे भगवान के कहे अनुसार बछडे के पास गये और उसके कान में उन्होंने नारायण का मंत्र सुनाया। बडे दुःख की बात है कि वह बछडा भी तुरंत मर गया।

यह देखकर नारद एकदम भयभीत हो गये। अब उन्होंने निश्चय कर लिया कि आगे से किसी और के पास जाकर नारायण का मंत्र सुनाना नहीं चाहिए। लेकिन भगवान विष्णु ने नारद को देखकर कहा, ''देवर्षि आप इतनी सी बात के लिए क्यों इतना डरते हैं अब आप काशी के राजा चंद्रसेन के महल में जाइये। कई साल के बाद अभी उसे पुत्र वर की प्राप्ति हुई है। वहाँ पालने में लेटे उसके बच्चे के कान में नारायण नाम मंत्र को सुनाकर आइये। यही अंतिम बार है और आखिर वहाँ आपको भी उस नाम मंत्र के महत्व का ज्ञान भी मिल जायेगा।'' देवर्षि नारद ने मन में सोचा कि लंबे अर्सों के बाद राजा को पुत्र का भाग्य मिला है। इस दशा में मैं जाकर उस बच्चे के कान में नारायण नाम मंत्र को सुनाऊँ और बच्चा मर जाय तो राजा जरूर मुझे मार देगा। इसलिए वे अपना कदम आगे बढाने के लिए हिचकने लगे। उनके मन की बात को भगवान ने ताड लिया और उनको हिम्मत दिलाते हुए कहा, ''आप निश्चिंत जाइये और यह कार्य करके उस नाम के महत्व का ज्ञान प्राप्त कर लीजिए।''

भगवान की बात पर विश्वास करते और न करते हुए देवर्षि नारद काशी के राजा के महल में गये। वहाँ पालने में मासूम बच्चा लेटा हुआ था। नारद जी बडी हिम्मत से उसके कान में नारायण मंत्र को सुना दिया। अब वह बच्चा उठ बैठ गया और उसे देखकर हँसने लगा। नारद मुनि को बच्चे का व्यवहार देखकर बडा आश्चर्य हुआ। इतने में वह बच्चा नारद मुनि को देखकर कहा, ''आप को इसमें आश्चर्य करने की जरूरत नहीं है। क्योंकि आपके द्वारा नारायण नाम मंत्र को सुनने के बाद मुझे यह दशा प्राप्त हुई है। क्योंकि मैं पहले एक नाचीज कीडा था आपके द्वारा भगवान का नाम मंत्र सुना; उसके बाद तितली के रूप में पैदा हुआ आपसे भगवान का नाम मंत्र सुनकर हिरण का शावक बना; फिर आपके द्वारा नाम मंत्र सुना और मुझे गाय के बछडे के रूप में जन्म मिला। अब मैं फिर आपके द्वारा नाम मंत्र सुना और आखिर अत्यंत श्रेष्ठ मानव जन्म प्राप्त हुआ है। इसलिए आपको इसमें डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं आपको धन्यवाद समर्पित करता हूँ। क्योंकि आपके द्वारा नारायण का नाम मंत्र सुनाकर अत्यंत श्रेष्ठ मानव जन्म को दिलाया है।''

अब देवर्षि नारद को स्पष्ट ज्ञात हो गया है कि नारायण के नाम मंत्र में ऐसा बल है जो जीव उसे सुनता है वह अत्यंत पवित्र स्थान प्राप्त कर लेता है। अब वे समझ गये कि यह सब भगवान विष्णु की लीला है।

अक्तूबर-2023 महीने का क्विज-15 के समाधान

1) तिरुमल, **2)** पद्मावती देवी,

3) आकाशराज, **4)** विश्वकर्मा, **5)** बृहस्पति,

6) वकुला माता, **7)** छः महीने तक,

8) हेमांग महाराज, **9)** चंद्रघंटिका देवी,

10) महागौरी, **11)** अंजना देवी,

12) हनुमान जी, **13)** पराशर संहिता,

14) चक्रस्नान, **15)** श्री वराह स्वामी.

चित्रकथा

गधा भी गुरु है!

मूल कथा - श्रीमती श्रीनिधि
अनुवादक - श्री के.रामनाथन
चित्रकार - श्री कमलक्कण्णन्

गुरुकुल में गुरूजी पाठ सिखाने के बाद थोडी देर तक शिष्यों के साथ बातचीत किया करते थे। एक दिन शिष्यों ने अपने गुरु से...

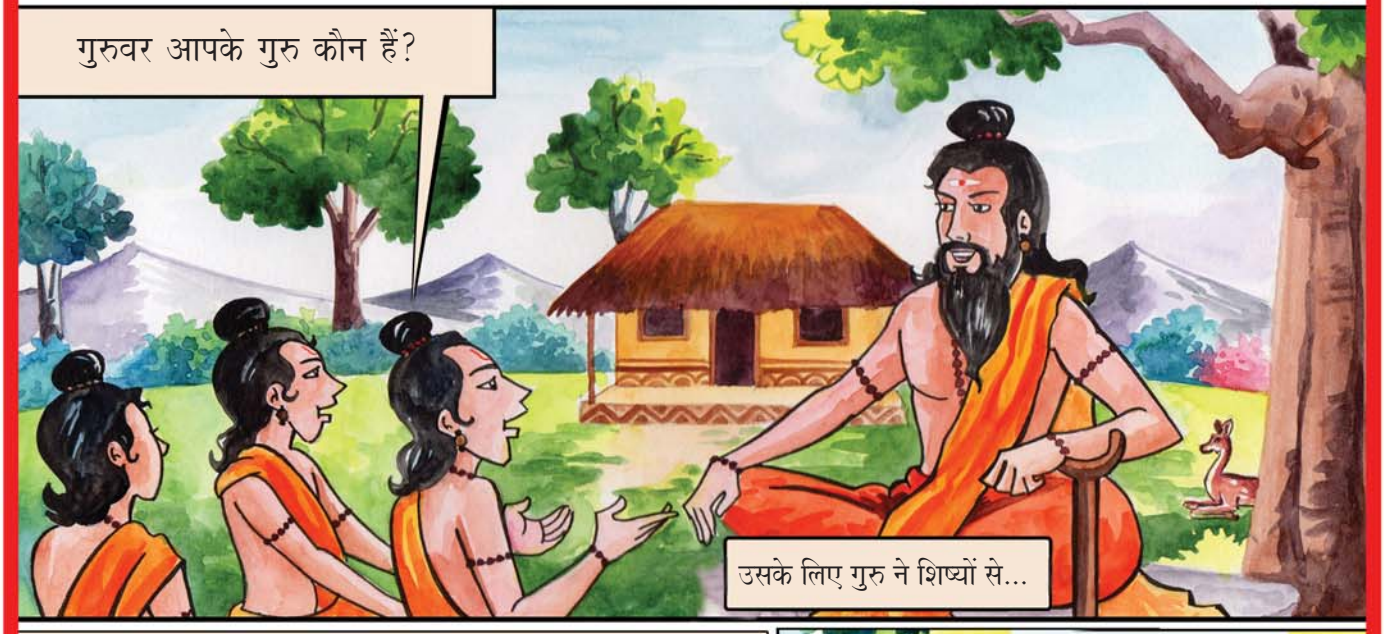

पाठ सिखाने वाले गुरु होते हैं। उस पाठ को सीखने वाला शिष्य होता है। इसलिए मैंने जिन जिनसे पाठ सीखा है वे सब मेरे गुरु हैं।

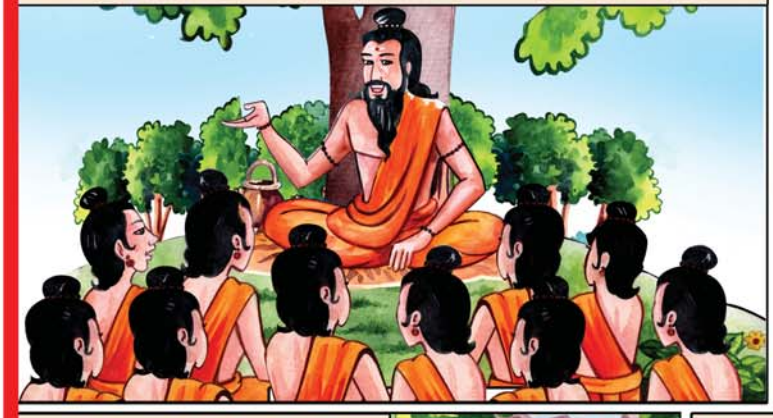

सबेरे गधा, अपने पीठ पर मैले कपडों के गट्ठर को ढोकर ले आया था। उसके पीठ पर राजा के कपडे भी थे और अन्य नौकर तथा लोगों के मैले कपडे भी ढोकर ले आया था। उसने कभी नहीं सोचा कि ये कपडे मैले हैं और उसमें से बदबू निकलती है। उसके मन में ऐसा आनंद भी नहीं था कि मैं राजा के कपडे को ढो रहा हूँ और उसमें ऐसा दुःख भी नहीं था कि मैं नौकर के कपडों को ढो रहा हूँ।

वैसे ही शाम को वह गधा अपने पीठ पर धोये साफ तथा सुगंधित कपडे ढोकर लौट जाता था। सबेरे उसके निकट आते समय अपना नाक बंद करके आया वह धोबी, अब शाम को बडे आनंद से उस गधे के साथ आ रहा था। उस आदमी में राजा, नौकर, अन्य जन आदि के कपडों के दुर्गंध और सुगंध पर का भेद दिखायी पडता था। लेकिन सिर्फ अपने परिश्रम को लक्ष्य मानकर रहते उस गधे में कोई ऐसा भेद महसूस नहीं हुआ था। वह सदा एक ही मनोविचार में ही था।

सीख - मैंने उस गधे से सुख के समय झूम उठना, दुःख के समय उदास बैठना आदि से बचकर रहने का ज्ञान, ऊँच-नीच को न देखने का उत्तम गुण, सदा समान मनोविचार में रहना आदि सीख को सीख लिया है। इसलिए वह गधा भी मेरा गुरु बन गया है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।

2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।

3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।

4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।

5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।

6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।

7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।

8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।

9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।

10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।

11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।

12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम.....

लिंग/आयु....., चंदा नंबर.....

पता.....

.....

मोबाइल नं.....

क्विज-17

1) तिरुवहीन्द्रपुरम् (अयिन्दै) मंदिर के तायार (माताजी) का नाम क्या है?

ज).....

2) तिरुवहीन्द्रपुरम् (अयिन्दै) मंदिर के विमान गोपुरम् का नाम क्या है?

ज).....

3) तिरुक्कोवलूर (गोपपुरम्) मंदिर के मूलमूर्ति भगवान का नाम क्या है?

ज).....

4) तिरुक्कोवलूर (गोपपुरम्) मंदिर के तीर्थ (पुष्करिणी) का नाम क्या है?

ज).....

5) तिरुक्कोवलूर (गोपपुरम्) मंदिर के विमान गोपुर का नाम क्या है?

ज).....

6) धन्वंतरी कौन सा भगवान का रूप है?

ज).....

7) देवर्षि नारद किस भगवान के महान भक्त हैं?

ज).....

8) शकुंतला का माता-पिता का नाम क्या है?

ज).....

9) च्यवन के माता-पिता कौन है?

ज).....

10) शकुंतला के पति का नाम क्या है?

ज).....

11) अयोध्या में विराजित भगवान जी का नाम क्या है?

ज).....

12) वेदों को कितने भागों में विभक्त किया?

ज).....

13) कौसल्या और दशरथ के पुत्र का नाम क्या है?

ज).....

14) 'च्यवनप्राश' नामक दिव्य औषध किस ऋषि के नाम से प्रसिद्ध हुआ?

ज).....

15) प्रभु श्रीराम का पत्नी का नाम क्या है?

ज).....

बालविकास

बिंदी को जोड़िए

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) श्री महाविष्णु	अ) नंदी
2) श्रीराम	आ) मकर
3) परमेश्वर	इ) हनुमान
4) गंगा मैय्या	ई) ऐरावत
5) इंद्र देव	उ) गरुड

1) उ 2) इ 3) अ 4) आ 5) ई

श्री वेंकटेश्वर स्तोत्र

श्रीवेंकटाचलाधीशं
श्रीयाऽऽध्यासित वक्षसम्।
श्रितचेतन मंदारं
श्रीनिवास महंभजे।।

चित्र में अंतर खोजे!

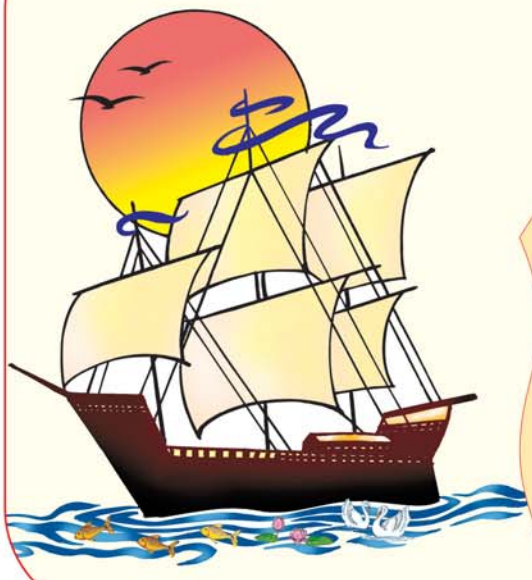

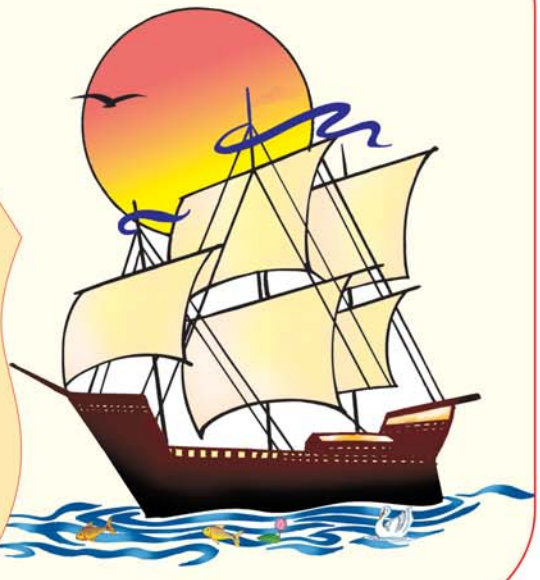

१) पक्षी
२) झंडा
३) पर्दे की चटाई की रस्सी
४) मछली
५) कमल
६) हंसा
७) पानी की लहरें

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : .....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
   .....
   पिनकोड .....
   मोबाइल नं .....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-; विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
   भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष :
2264359, 2264543.

संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

नई दिल्ली से अखिल भारत आयुर्वेद महासम्मेलन, भारत सरकार आयुष मंत्रालय और ति.ति.दे. श्री वेंकटेश्वर आयुर्वेद कलाशाला के संयुक्त आध्वर्य में तिरुपति में स्थित कच्छपि सभागार में दि. 27-10-2023 से दि. 29-10-2023 तक तीन दिनों का आयुर्वेद पर्व-2023 कार्यक्रम को आयोजित किया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. के जे.ई.ओ. श्रीमती सदा भार्गवी, आई.ए.एस., ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेकर ज्योति प्रज्वलन करके, इस कार्यक्रम को प्रारंभ किया। तदनंतर संदेश भी दिया था। इस कार्यक्रम में आयुष मंत्रालय के संयुक्त सचिव, राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ प्रेसिडेंड, आयुष सलाहकार, एन.सी.ऐ.एस.एम. के अध्यक्ष, एस.वी.आयुर्वेद कालेज प्रिन्सिपल, अध्यापक आदि अन्य सभ्यों ने भाग लिया।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-11-2023 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.